



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

23वां अंक

सुरभि



कार्यालय

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा- I) ओडिशा, भुवनेश्वर

महालेखाकार (लेखापरीक्षा- II) ओडिशा, भुवनेश्वर

प्रधान निदेशक- लेखापरीक्षा (केंद्रीय) हैदराबाद, शाखा: भुवनेश्वर



संदेश



श्री राज कुमार
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-1)
ओडिशा, भुवनेश्वर

हमारे कार्यालय को फूलों की माला की तरह एकता के सूत्र में पिरोकर रखने वाली कार्यालयीन गृह राजभाषा हिंदी पत्रिका 'सुरभि' के 23 वें अंक को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मैं अत्यंत ही हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ।

हमारे कार्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रति अनुकूल वातावरण बनाने की दिशा में राजभाषा हिंदी पत्रिका एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए 'सुरभि' पत्रिका का निरंतर प्रकाशन कार्यालय द्वारा किया जा रहा है। यह बहुत ही गौरव की बात है।

पत्रिका के सभी रचनाकार एवं लेखक साधुवाद के पात्र हैं जिन्होंने अपनी लेखनी एवं विचारों के माध्यम से पत्रिका को अलंकृत करने में योगदान दिया है। साथ ही 'सुरभि' पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े संपादक मंडल के सभी सदस्यों का मैं हृदय से आभार प्रकट करता हूँ।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका का यह अंक भी पूर्व के अंकों की भांति सभी को पसंद आएगा और भविष्य में भी आप लोग अपनी रचनाओं से इसे समृद्ध करते रहेंगे।

पत्रिका की सफलता मेरी शुभकामनाएं।

(राज कुमार)
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-1)
ओडिशा, भुवनेश्वर

संदेश



श्री विश्वनाथ सिंह जादौन
महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II)
ओडिशा, भुवनेश्वर

कार्यालय की राजभाषा हिंदी पत्रिका 'सुरभि' के 23 वें अंक को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत सुखद अनुभूति का एहसास हो रहा है।

पत्रिका का निरंतर अर्धवार्षिक अंक के रूप में प्रकाशन कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों का राजभाषा के प्रति निष्ठा एवं समर्पण को दर्शाता है। पत्रिका में विभिन्न विषयों से संबंधित रचनाएं कार्यालय में हिंदी के प्रति अभिरुचि तथा ओडिशा में हिंदी की प्रगति को दर्शाती हैं।

पूर्व के अंकों की भाँति 'सुरभि' के 23 वें अंक को भी सतरंगी कलेवर देकर विभिन्न लेखों, कहानियों, कविताओं, संस्मरण तथा कार्यालयीन गतिविधियों के छाया चित्रों से सुसज्जित किया गया है जिसके लिए मैं 'सुरभि' पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी सदस्यों एवं इसमें सम्मिलित सभी लेखकों, रचनाकारों को उनके सप्रेम प्रयास के लिए हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ।

पत्रिका की सफलता मेरी शुभकामनाएं।

(विश्वनाथ सिंह जादौन)
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II)
ओडिशा, भुवनेश्वर

संदेश



श्री दीपक रघु
वरिष्ठ उप महालेखाकार एवं
प्रधान संपादक

यह बहुत ही गर्व और उत्साह का विषय है कि हमारे कार्यालय की राजभाषा हिंदी पत्रिका 'सुरभि' के 23 वें अंक का लोकार्पण हो रहा है। 'सुरभि' वह मंच है जहाँ पर हम अपनी कविताओं, कहानियों और लेखों के माध्यम से अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हैं और अपने विचारों का आदान-प्रदान करते हैं।

'सुरभि' पत्रिका के विगत अंकों से मुझे अनुभव हुआ है कि हमारे कार्यालय में कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों में प्रभावशाली लेखन प्रतिभा विद्यमान है। ऐसा भी संज्ञान में आया है कि जैसे-जैसे हिंदी भाषा के उपयोग के प्रति जागरूकता उत्पन्न हो रही है लेखकों की संख्या में भी लगातार वृद्धि हो रही है जो राजभाषा नीति के अनुपालन में सहायक सिद्ध हो रही है।

यह एक सराहनीय प्रयास है कि हमारा कार्यालय लेखापरीक्षा संबंधी कार्यों का बखूबी निष्पादन करने के साथ-साथ कार्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए विशिष्ट भूमिका निभा रहा है।

मुझे आशा है कि 'सुरभि' पत्रिका के 23वें अंक में प्रकाशित की जा रही रचनाएं सभी पाठकों को पसंद आएंगी। मैं संपादक मंडल एवं रचनाओं के लेखकों को हार्दिक बधाई देता हूँ तथा पत्रिका के प्रकाशन की सफलता की कामना करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित,

(दीपक रघु)

वरिष्ठ उप महालेखाकार एवं

प्रधान संपादक

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)

ओडिशा, भुवनेश्वर

संदेश



सुश्री एकता सिंह
उप महालेखाकार

गृह पत्रिकाओं के प्रकाशन से कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन के लिए अनुकूल वातावरण एवं राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में निर्बाध मार्गदर्शन मिलता है। हिन्दी गृह ई-पत्रिका 'सुरभि' का प्रकाशन भी इसी दिशा में एक अनुपम अनुकरणीय पहल है। ऐसे अभिनव प्रयास से राजभाषा हिन्दी के उत्तरोत्तर विकास एवं निरंतर प्रयोग में वृद्धि होती है। "एक स्वतंत्र देश अपनी भाषा के बिना गूंगा होता है।" अतः हिंदी को समृद्ध और विकसित करना हम सबकी जिम्मेदारी है। इस दृष्टि से ई-पत्रिका 'सुरभि' के 23 वें अंक का प्रकाशन एक सराहनीय प्रयास है। निश्चय ही यह पत्रिका राजभाषा हिन्दी के प्रति निष्ठा और अभिरूचि दर्शाने का एक महत्वपूर्ण माध्यम सिद्ध होगी।

मैं 'सुरभि' पत्रिका के संपादक मंडल, रचनाकारों और प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सफल प्रयास के लिए उन्हें बधाई देती हूँ और इसी तरह भविष्य में भी 'सुरभि' के सफल प्रकाशन की कामना करती हूँ।

शुभकामनाओं सहित।

(एकता सिंह)

उप महालेखाकार

कार्यालय महालेखाकार(लेखापरीक्षा-II)

ओडिशा, भुवनेश्वर

संदेश



सुश्री तान्या अम्बष्ठ
उप महालेखाकार

विभिन्न विधाओं से सुसज्जित कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका 'सुरभि' के 23 वें अंक का प्रकाशन अत्यंत गौरव और प्रसन्नता का विषय है। राजभाषा हिंदी के विकास के लिए हिंदी पत्रिका एक सशक्त माध्यम है एवं पत्रिका का प्रकाशन इस कार्यालय के कार्मिकों के रचनात्मक कौशल और राजभाषा हिंदी के प्रति उनके समर्पण को दर्शाता है।

राजभाषा हिंदी में भारत के विशिष्ट सांस्कृतिक मूल्य विद्यमान हैं जिनकी वजह से हम पूरे विश्व में अतुलनीय हैं। भारत में हिंदी ही एकमात्र भाषा है जिसने विविधता में एकता स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

मैं संपादक मंडल से जुड़े सभी कार्मिकों तथा रचनाकारों को उनके सराहनीय योगदान हेतु बधाई देती हूँ तथा पत्रिका के प्रकाशन हेतु अपनी हार्दिक शुभकामनाएं व्यक्त करती हूँ।

तान्या अम्बष्ठ

(तान्या अम्बष्ठ)

उप महालेखाकार

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)

ओडिशा, भुवनेश्वर

संदेश



श्री स्वामी शुभम बैजनाथ
उप महालेखाकार

यह अत्यंत प्रसन्नता और गौरव का विषय है कि कार्यालय की अर्धवार्षिक हिंदी पत्रिका 'सुरभि' के 23 वें अंक का प्रकाशन ई-पत्रिका के रूप में किया जा रहा है। सुरभि पत्रिका न केवल राजभाषा हिन्दी के समुचित प्रचार-प्रसार की दिशा में अपना योगदान देती है बल्कि यह हमारे कार्यालय के कर्मिकों की लेखकीय क्षमता, कलात्मकता, रचनाशीलता एवं नवीन कल्पनाओं को उभारने के लिए एक प्लेटफॉर्म भी प्रदान करती है। अतः यह पत्रिका रचनाकारों के आत्मविश्वास में आशातीत वृद्धि का एक माध्यम है।

'सुरभि' पत्रिका पहले भी एक सफल पत्रिका के रूप में प्रकाशित होते रहने की महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है एवं भविष्य में भी इसी तरह इसके आगामी अंक का उद्देश्यपूर्ण सफल प्रकाशन होता रहे, इसी कामना के साथ मैं संपादक मंडल की ओर से सुरभि पत्रिका के प्रकाशन हेतु किए गए श्रमसाध्य प्रयास की सराहना करता हूँ। 'सुरभि' पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

(स्वामी शुभम बैजनाथ)

उप महालेखाकार

कार्यालय महालेखाकार(लेखापरीक्षा-II)

ओडिशा, भुवनेश्वर

संदेश



श्री सचिन कृष्ण कौशिक उप महालेखाकार

कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका 'सुरभि' के 23 वें अंक के प्रकाशन पर मुझे अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। पत्रिका का सफल प्रकाशन कार्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रति सकारात्मकता को दर्शाता है।

हिंदी का ज्ञान ही राजभाषा हिंदी में कार्य करने का मुख्य आधार है। मेरा मानना है की पत्रिका का यह अंक कार्यालय के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों में हिंदी के प्रति रुचि को बढ़ाने में सहायक होगा। यह भी आशा करता हूँ कि यह पत्रिका कार्यालय के कर्मिकों में कार्यालयीन कार्य को अधिकाधिक हिंदी में करने की क्षमता निर्माण में भी सहायक होगी।

पत्रिका के संपादक मंडल, रचनाकारों एवं प्रकाशन से जुड़े सभी कर्मिकों को उनके सफल प्रयास एवं योगदान हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु शुभकामनाएं।

अभिने

(सचिन कृष्ण कौशिक)

उप महालेखाकार

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)

ओडिशा, भुवनेश्वर

संदेश



श्री विमलेश कुमार
उप महालेखाकार

कार्यालय की गृह हिंदी पत्रिका 'सुरभि' के 23 वें अंक को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यधिक हर्ष की अनुभूति हो रही है। इस पत्रिका का सफल प्रकाशन इस कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों के राजभाषा हिंदी के प्रति रुझान एवं लेखन के प्रति अभिरुचि का परिणाम है।

राजभाषा हिंदी का विकास एवं प्रसार ना केवल हमारा संवैधानिक दायित्व है अपितु यह हम सब का नैतिक कर्तव्य भी है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका का यह अंक कार्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं कार्यालय के कर्मिकों के रचनात्मक कौशल को निखारने में सहायक होगा।

पत्रिका 'सुरभि' के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को मेरा हार्दिक आभार एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं।

(विमलेश कुमार)

उप महालेखाकार

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-1)

ओडिशा, भुवनेश्वर

संदेश



श्री बिभांशु शेखर नायक
उप निदेशक

गृह हिंदी पत्रिका 'सुरभि' के 23 वें अंक के प्रकाशन पर मैं सभी को हार्दिक बधाई देता हूँ एवं पत्रिका के संपादक मंडल, रचनाकारों एवं प्रकाशन से जुड़े सभी कार्मिकों का राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु किये जा रहे इस प्रयास की सराहना करता हूँ।

एक लोकतांत्रिक देश में सबसे ज्यादा समझी और बोली जाने वाली भाषा ही संपर्क भाषा के रूप में सार्थक भूमिका निभा सकती है। राजभाषा हिंदी, हमारी अभिव्यक्ति का माध्यम होने के साथ-साथ भारत की विविधता में एकता के सूत्र को मजबूत करने का भी एक जरिया है। वर्तमान में हिंदी अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी ख्याति प्राप्त कर रही है। हिंदी को ख्याति दिलाने में पत्र-पत्रिकाओं के योगदान को भी नकारा नहीं जा सकता।

मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका का यह अंक भी पाठकों की उम्मीदों पर खरा उतरेगा। पत्रिका के सफल एवं निरंतर प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

बिभांशु शेखर नायक
उप निदेशक

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय)
हैदराबाद
शाखा कार्यालय: ओडिशा, भुवनेश्वर



आपके पत्र



कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) म.प्र.
53, अरेरा हिल्स, होशंगाबाद रोड, भोपाल- 462011
क.हि.क./का-7/ जावक - 64 दिनांक 26/12/2023

प्रति,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी / हिन्दी अनुभाष
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I), का कार्यालय
ओडिशा, भुवनेश्वर

विषय : कार्यालय की अर्धवार्षिक हिन्दी ई-पत्रिका "सुरभि" के 21-22वें संयुक्तों की पावती
बाबत।
संदर्भ : आपके पत्र सं: हिन्दी प्रकोष्ठ/सुरभि (07)/2022-23/443 दिनांक 28.11.2023

महोदय/महोदया,

उपर्युक्त संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय द्वारा "सुरभि" के 21-22वें संयुक्तों की ई-
प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में सभी रचनाएँ प्रशंसनीय हैं विशेष तौर पर डॉ. इन्द्रराय
नमः, सबसे महान धर्म, नदी मातिनी और रच यात्रा, एक रिश्ता प्रकृति और पर्यावरण के साथ,
मिथिला का गौरवमयी अतीत, दिल और दिमाग के बीच कश्मकश, आदि रचनाएँ सारगर्भित
एवं सराहनीय हैं।

पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम है। कार्यालयीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता को और
निखारा है। पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई। पत्रिका
के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी कक्ष



असेसमेंट और अकाउंट्स
DEPARTMENT
आर्थिक असेसमेंट (ईए) का कार्यालय, भुवनेश्वर
On the DIRECTOR GENERAL OF AUDIT
(CENTRAL MUMBAI)
C-25, Audit House, Bhabha Kirti Complex,
Mumbai-400001



पत्रांक: म.नि.ले.प./क/रा.भा.अ./पत्रिका/68
दिनांक: 18/12/2023

सेवा में

वरिष्ठ उपमहालेखाकार/प्रशासन

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा - I) का कार्यालय

ओडिशा, भुवनेश्वर

विषय- कार्यालयीन पत्रिका "सुरभि" के 21और 22वें अंक की प्रति के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका "सुरभि" के 21और 22वें अंक की प्रति हुई
एतदर्थ धन्यवाद।

पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ उच्च कौटुंबिक अर्थ अत्यंत रोचक, ज्ञानवर्धक, मनोरंजक, पठनीय
एवं सराहनीय हैं। निम्नलिखित कुछ रचनाएँ संक्षेप में प्रस्तुत की जाती हैं-

क्रम सं.	रचना लेख	रचनाकार (लेखक/श्री/शुकी)
1	डॉ. इन्द्रराय नमः	निरंजन शरण अग्रवाल
2	भुवनेश्वरी राजभाषा हिन्दी	राहुल कुमार वर्मा
3	मिथिला का गौरवमयी अतीत	राजेश झा
4	जय कश्मकश	वर्षारानी

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु इस
कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय

व.से.प.अ.रा.भा.



कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हक.) पंजाब एवं यू.टी. चंडीगढ़ 160017
O/o THE ACCOUNTANT GENERAL (A & E) PUNJAB & U.T. CHANDIGARH-160017
फैक्स - 0172-2703110, दूर. सं. - 2702272, 2702072
क्रमांक - हिन्दी कक्ष/समीक्षा/10/2023-24/639
दिनांक - 26/12/2023

सेवा में,

वरिष्ठ उप महालेखाकार/प्रशासन,

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) का कार्यालय,

ओडिशा, भुवनेश्वर।

विषय - विभागीय हिन्दी पत्रिका "सुरभि" के 21-22वें संयुक्तों की पावती के संबंध में।
महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका "सुरभि" के 21-22वें संयुक्तों की ई-प्रति प्राप्त
हुई। इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ रोचक, भावपूर्ण एवं उद्देश्यपूर्ण हैं। पत्रिका का आगमन पुराने
अति मनोहर एवं आकर्षक है। कार्यालयीन गतिविधियों के छायाचित्र भी मनमोहक हैं।
श्री निरंजन शरण अग्रवाल की "डॉ. इन्द्रराय नमः", श्री सुशील संयुक्त आर्य की "मुझे-कनो न कनो"
शहर, श्री शैलेन्द्र कुमार "कार्यालय की नई कैटीन", श्री सतीश कुमार की "छात्र-छात्रिका-दिल" तथा श्री नवीन
चंद्र चौधरी की "पगली की कहानी" रचनाएं विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं।
पत्रिका को सुवैचित्र्य एवं उपयोगी बनाने हेतु संपादक पत्रिका में पूर्ण प्रयास किए हैं। पत्रिका के
समा रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका के भविष्य
प्रगति के लिए शुभकामनाएं।



प्रधान निदेशक रक्षा - वाणिज्यिक

लेखापरीक्षा का कार्यालय, बंगलूर-560001

OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF
AUDIT DEFENCE- COMMERCIAL, BANGALURU-560001.

दिनांक 20/12/2023

दिनांक - 20/12/2023

11/01/2024

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा),

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा I & II) का कार्यालय

भुवनेश्वर ओडिशा - 752003

विषय:- प्रशंसा पत्र।

महोदय /महोदया,

आपके कार्यालय की वार्षिक हिन्दी ई-पत्रिका "सुरभि" का 21 & 22 वां अंक की प्रति इस
कार्यालय को सहर्ष प्राप्त हुई है। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएँ पठनीय एवं प्रशंसनीय हैं।
विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिन्दी कार्यालयन की दिशा में एक स्वर्णिम
प्रयास है। पत्रिका के प्रकाशन के सफल प्रयास हेतु शुभकामनाएं।

धन्यवाद,

भवदीय,

हिन्दी अधिकारी

सुरभि परिवार

परामर्शदाता समिति

श्री राज कुमार

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)

श्री विश्वनाथ सिंह जादौन

महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II)

श्री दीपक रघु

वरिष्ठ उप महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)

सुश्री एकता सिंह

उप महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II)

सुश्री तान्या अम्बष्ठ

उप महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)

श्री बिभांशु शेखर नायक

उप निदेशक (केंद्रीय राजस्व लेखापरीक्षा)

संपादक मंडल

प्रधान संपादक

श्री दीपक रघु

वरिष्ठ उप महालेखाकार

(लेखापरीक्षा-I)

सह संपादक

श्री आशुतोष प्रसाद प्रतिहारी

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्रीमती शुभस्मिता आचार्य

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्रीमती राजश्री पटनायक

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री गिरराज शरण अग्रवाल

हिंदी अधिकारी

श्री पुरुषोत्तम गिरि

वरिष्ठ अनुवादक

श्री संजीव कुमार यादव

कनिष्ठ अनुवादक

श्रीमती संयुक्ता जड़िया

कनिष्ठ अनुवादक

श्री राहुल कुमार वर्मा

कनिष्ठ अनुवादक

सुश्री सुषमा साव

कनिष्ठ अनुवादक

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	रचना का नाम	रचनाकार का नाम	पृष्ठ सं.
01.	मेरी दार्जीलिंग यात्रा	श्री आशुतोष प्रसाद प्रतिहारी	1
02.	श्री जगन्नाथपुरी भ्रमण: एक अनुभूति	श्रीमती मीनाक्षी आचार्य	5
03.	जी.आई. टैग	श्रीमती आँखी सरकार	10
04.	भारतीय विरासत और संस्कृति की मिसाल- बाली यात्रा	श्री पुरुषोत्तम गिरि	14
05.	पर्यटकों एवं पर्यावरण प्रेमियों के लिए स्वर्ग है ओडिशा की 06 रामसर साइटें	श्री अमित कुमार प्रधान	20
06.	ओडिशा की पाँच पारंपरिक और प्रसिद्ध साड़ियाँ	श्रीमती अपिता रॉय	24
07.	देवमाली पर्वत- ओडिशा का उच्चतम शिखर	श्रीमती रीटा अग्रवाल	27
08.	भीतरकनिका मैंग्रोव: राष्ट्रीय उद्यान, ओडिशा की यात्रा	श्रीमती तुलसी वर्मा	31
09.	गोटीपुआ-ओडिशा का एक नृत्यनाट्य	श्रीमती स्वर्ण स्वरूपा पात्र	35
10.	कुण्डेश्वर	श्रीमती संयुक्ता जड़िया	39
11.	अच्छी ऑडिट रिपोर्ट बनाने की राह में	श्री गुप्त प्रसाद मिश्र	42
12.	संघर्ष	श्री पी श्रीनिवास	44
13.	व्यावहारिकता	श्री संजीव कुमार यादव	47
14.	शिखर धर्म	श्री राहुल कुमार वर्मा	51
15.	मैथिल कवि कोकिल विद्यापति	श्री राजेश झा	54
16.	नारी शक्ति का परिचय नारी शक्ति: देवी और प्राकृतिक शक्ति का प्रतीक	सुश्री तितली पंडा	57
17.	वो दिन भी आएगा	श्री जगबंधु दास	62
18.	मैं मतदान करने जरूर जाऊंगा	श्री गिरराज शरण अग्रवाल	63
19.	फिर उसी बचपन का इंतजार रहता है	श्री भूदेव प्रकाश	65
20.	हाय परीक्षा आई	श्री राकेश कुमार	67
21.	राजभाषा	श्री अजय साव	69

मूल्य: राजभाषा के प्रति निष्ठा

नोट: पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं के साथ संपादक मंडल का सहमत होना जरूरी नहीं है।



हिंदी भाषा से संबंधित सूक्तियां

- ❖ हिंदी द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है - स्वामी दयानंद
- ❖ राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है - महात्मा गांधी
- ❖ भारतीय भाषाएं नदियां हैं और हिंदी महानदी - रवीन्द्रनाथ ठाकुर
- ❖ हिंदी भाषा एक ऐसी सार्वजनिक भाषा है, जिसे बिना भेद-भाव प्रत्येक भारतीय ग्रहण कर सकते हैं - मदन मोहन मालवीय
- ❖ हिंदी चिरकाल से ऐसी भाषा रही है जिसने मात्र विदेशी होने के कारण किसी शब्द का बहिष्कार नहीं किया - डॉ. राजेन्द्र प्रसाद
- ❖ हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्रोत है - सुमित्रानंदन पंत
- ❖ हिंदी राष्ट्रीयता के मूल को सींचती है और उसे दृढ़ करती है - पुरुषोत्तम दास टंडन
- ❖ हिंदी राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है - डॉ. संपूर्णानंद
- ❖ आप जिस तरह बोलते हैं, बातचीत करते हैं, उसी तरह लिखा भी कीजिए। भाषा बनावटी नहीं होनी चाहिए - महावीर प्रसाद द्विवेदी
- ❖ समस्त भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक हो तो वह देवनागरी ही हो सकती है - जस्टिस कृष्णस्वामी अय्यर
- ❖ देवनागरी ध्वनिशास्त्र की दृष्टि से अत्यंत वैज्ञानिक लिपि है - रविशंकर शुक्ल

मेरी दार्जिलिंग यात्रा

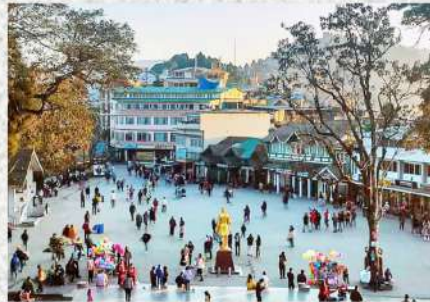
श्री आशुतोष प्रसाद प्रतिहारी
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी



चहारदीवारी में खुद को कैद करके न रखिए,
जीवन में यात्रा का आनंद लीजिए।

आज के इस दौर में, मानव जीवन व्यावसायिक/कार्यालयीन उत्तरदायित्वों, पारिवारिक जिम्मेदारियां, तरह-तरह की बीमारियों, भविष्य की चिंता और आपाधापी से भरा पड़ा है। मनुष्य के पास अपने लिए समय ही नहीं बचा है। ऐसे में कभी-कभी जीवन के कुछ पल स्वयं के लिए चुरा लेने की इच्छा होती है। ऐसे ही विचारों में मग्न मैं घर के ड्राइंग रूम में बैठा हुआ था अचानक मेरी नजर हिंदी मासिक पत्रिका के ग्रीष्म ऋतु पर्यटन विशेषांक पर पड़ी। इस पत्रिका में देश के विभिन्न हिल स्टेशनों का वर्णन था। जी हाँ आप समझ ही गए होंगे पहला हिल स्टेशन था- दार्जिलिंग- द क्वीन ऑफ हिल स्टेशन।

पत्रिका में दार्जिलिंग के विस्तृत विवरण ने मेरे अंदर दार्जिलिंग घूमने की तीव्र इच्छा जागृत कर दी। इस इच्छा को मूर्त रूप के साथ दार्जिलिंग जाने का



इस हेतु मैं मार्च में भुवनेश्वर से कोलकाता होकर दार्जिलिंग, बागडोगरा हवाई किलोमीटर दूर था। जैसे ही निकल कर आगे बढ़े, थोड़ी ही मधुर झोंका मुझे सहला गया और मार्ग के दोनों ओर बिखरे प्राकृतिक सौन्दर्य ने मुझे मुग्ध कर दिया। सिलीगुड़ी से दार्जिलिंग का सड़क मार्ग और रेल मार्ग लगभग साथ चलता है।

देने हेतु मैंने अपने मित्र निर्णय किया।

हवाई जहाज से बागडोगरा पहुँचा। अड्डे से लगभग सौ बागडोगरा शहर से बाहर देर में ठंडी हवाओं का



दार्जिलिंग पहुँचते ही मुझे हल्की थकान महसूस हुई इसलिए मैंने थोड़ी देर आराम किया। आराम करने के बाद मॉल रोड मार्केट पहुँचे। दार्जिलिंग के प्रमुख स्थलों में से एक है। मॉल दार्जिलिंग देवी नदी के स्थित एक प्रमुख शॉपिंग यहाँ पर आपको स्थानीय हस्तशिल्प, उत्पादों, वस्त्र और खाद्य पदार्थों की अनूठी विविधता मिलती है। इसके अलावा, यहाँ पर कई रेस्तरां और चाय की दुकानें भी हैं जहाँ आप दार्जिलिंग की मशहूर चाय का आनंद ले सकते हैं।



शाम को
यह
पर्यटन
रोड
किनारे
केंद्र है।

फिर मेरा अगले दिन दार्जिलिंग घूमने का कार्यक्रम था तथा सुबह जल्दी उठना भी था क्योंकि टाइगर हिल पर सूर्योदय देखने जाना था। मैं तो बिस्तर पर लेटते ही सो गया। अगले दिन मेरे ड्राइवर ने आकर जगाया और पूछा कि साहब- टाइगर हिल नहीं जाना है क्या ? मैं जल्दी से तैयार हो कर गाड़ी में बैठ गया। अभी चारों ओर घोर अंधेरा ही था। मार्च महीने में ठंड इतनी थी कि जैकेट और स्वेटर में भी ठंड लग रही थी। जब मैं टाइगर हिल पहुँचा तो देखा कि वहाँ तो भारी संख्या में पर्यटक पहले से ही मौजूद थे। वे सभी सूर्योदय की प्रतीक्षा कर रहे थे। थोड़ी देर बाद आकाश लाल हो गया और सूर्योदय का मनोरम दृश्य आकाश में अंकित हो गया। सभी बहुत खुश होकर तालियाँ बजाने लगे। टाइगर हिल से कंचनजंघा की चोटियाँ भी दिख रही थीं। सूर्य की किरणों से दूध के समान सफेद पर्वत शिखर दमक रहे थे, प्रकृति के इस अनुपम सौन्दर्य को देखकर मन अधिक प्रसन्न हो गया।

टाइगर हिल जो कि समुद्र स्तर से 2590 मीटर की ऊँचाई पर है, से लौटते समय हम घूम रेलवे स्टेशन पर रुके। घूम रेलवे स्टेशन 2257 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है जो कि दार्जिलिंग हिमालियन रेलवे का उच्चतम बिंदु है। यहाँ घूम रेलवे म्यूजियम भी स्थित है। उसके बाद हम बतासिया लूप की ओर चल पड़े। बतासिया लूप, दार्जिलिंग हिमालयन रेलवे की ऊँचाई को कम करने के उद्देश्य से बनाया गया है। यहाँ की हरियाली और पर्वतों की ऊँची-ऊँची चोटियों मन मोह लेती हैं। बतासिया लूप पर शहीदों का स्मारक भी है। हमने शहीदों को नमन किया। इसी बीच



सुरभि 23वां अंक

बतासिया लूप पर टॉय ट्रेन आ गई। हमने ट्रेन में चढ़कर कुछ खूबसूरत लम्हों को अपने कैमरे में कैद किया। बतासिया लूप से दार्जिलिंग का सौंदर्य अद्भुत नजर आता है। हमने यहाँ गोरखा केप तथा खुकुरी पकड़कर फोटो भी खिंचवाई।

वहाँ हमने जो कि लाल रंग महीने में खिलता स्थानीय भाषा में स्थानीय लोगों से फूल गुलाबी, है।



Rhododendron फूल भी देखा जो कि का था जो प्रायः फरवरी से अप्रैल के है। इस फूल ने मेरा मन मोह लिया इसे बुरांश भी कहा जाता है। इस संबंध में जानकारी लेने पर ज्ञात हुआ कि यह लाल, सफेद एवं बैंगनी रंग का भी होता

इसके बाद हम बौद्धों का मठ, पद्मजा नायडू हिमालयन जूलॉजिकल पार्क तथा चाय के बागान देखने गए। वहाँ मैंने चाय की हरी पत्तियों को छूकर देखा तथा डलिया पीठ पर लादकर, फोटो भी खिंचवाई। इसके अतिरिक्त हम रॉक गार्डन भी गए वहाँ चारों ओर हरियाली व पहाड़ों के बीच थोड़ी थोड़ी दूरी पर झोपड़ी टाइप के मकान बने हुए थे जो बहुत ही खूबसूरत लग रहे थे। मन में ऐसे विचार आ रहे थे कि काश अपना भी यहाँ एक मकान होता।

दार्जिलिंग में घूमने के और भी बहुत से पर्यटन स्थल हैं किंतु सीमित समय होने के कारण मैं केवल इन्हीं जगहों पर घूम पाया और काफी थकान भी हो गई थी। रात में खाना खाकर सो गया क्योंकि अगले भुवनेश्वर के लिए वापसी करनी थी।

एक बात और, मुझे यहाँ अतिथि देवो भवः हुआ। यहाँ के स्थानीय लोगों का पर्यटकों के प्रति की भावना से मैं गदगद हो गया। यहाँ के व्यक्तियों विनम्र हैं और धोखाधड़ी का प्रश्न ही नहीं उठता।



थकान भी हो दिन मुझे का एहसास आदर-सत्कार का व्यवहार

दार्जिलिंग की यात्रा मेरे जीवन की सबसे यादगार यात्रा थी। यह एक ऐसी जगह है जो न केवल प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर है, बल्कि इसकी स्थानीय संस्कृति की विरासत भी बेहद रोमांचक है। साथ ही मैंने दार्जिलिंग की अनूठी संस्कृति और भूगोल के बारे में सीखा। मैंने अपने आसपास



के हरित प्राकृतिक सौंदर्य के साथ हीरे की तरह चमकते पहाड़ों को देखा। यहाँ की धरती से आने वाली ठंडी हवा मेरे मन को शांति और खुशी का एहसास कराती है। दार्जिलिंग की यात्रा ने मुझे प्राकृतिक सौंदर्य, पहाड़ी संस्कृति और पर्वतीय वातावरण के साथ एक अद्वितीय अनुभव का मौका दिया। यह यात्रा मुझे हमेशा याद रहेगी और भविष्य में अपने परिवार के साथ पुनः अवश्य जाऊंगा।



सुरभि 23वां अंक

श्री जगन्नाथ पुरी भ्रमण : एक अनुभूति

श्रीमती मीनाक्षी आचार्य
पर्यवेक्षक



बहुत दिनों से मैं और मेरी सहेली पुरी जाकर श्री जगन्नाथ जी के दर्शन करने के लिए मन बना रहे थे। हम श्रीमंदिर के बहुत पास रहना चाहते थे इसलिए लॉजिंग बुक करने में मुश्किल हो रही थी। फिर एक दिन हमें एक ऐसे लॉज का पता मिला जो श्रीमंदिर से बहुत ही करीब था। हम लोगों ने उस लॉज में ऑनलाइन एडवांस बुकिंग करके फ़ोन पे पर एडवांस पैसा भेज दिया, फिर उसी सप्ताह वीकेंड में दोनों सहेली सुबह-सुबह भुवनेश्वर से बस में रवाना हो गईं।

लगभग सुबह 10 बजे हम लोग पुरी शहर के बस-स्टॉप पर पहुँच गए, वहाँ से ऑटो रिज़र्व करके हम दोनों लॉज में पहुँच गए। रूम में जाकर थोड़ा विश्राम करके श्री जगन्नाथ जी के दर्शन के लिए निकल पड़े। हम लोग मंदिर के पास बने हुए जूता स्टैंड में अपनी चप्पलें रख कर मंदिर की ओर चलने लगे, मोबाइल श्री मंदिर के अंदर ले जाने की अनुमति नहीं है, ये बात हमें पता थी इसलिए हम दोनों अपने अपने मोबाइल लॉज में ही छोड़कर आये थे।

आमतौर पर श्री मंदिर के बाहर भक्तजनों की बड़ी संख्या में भीड़ देखने को मिलती है लेकिन सौभाग्य से हमें ज्यादा प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी और हम सुरक्षा कर्मियों से अनुमति पाकर श्री मंदिर के अंदर प्रवेश करने लगे, श्री मंदिर के बाहर अरुण स्तंभ को स्पर्श करके प्रणाम किया। श्री मंदिर के बाहर हस्तपाद प्रक्षालन स्थल में हाथ-पैर धोकर हम अंदर प्रवेश करने लगे।

प्रवेश-द्वार पर ही “श्री पतितपावन जी” के दर्शन करके हम धन्य हो गए, फिर आगे बढ़कर बाम पार्श्व में स्थित श्री विश्वनाथजी के दर्शन किये, फिर वहाँ से ‘बाईस पाहाच’ अर्थात् 22 सीढ़ियों को पार करके दर्शन के लिए गए परन्तु श्रद्धालुओं की भीड़ और लंबी कतार देखकर, वहाँ कुछ देर बाद में आने का फैसला किया और अन्य देवी-देवताओं के दर्शन के लिए बाम-पार्श्व की ओर मुड़ गए। वहाँ ‘श्री सत्यनारायण’ जी के दर्शन करके आगे “कल्पवट” की ओर गए, कल्पवट





के नीचे बट गणेश जी के दर्शन करके वहीं पर स्थित 'अष्टशंभू' और माँ 'सर्वमंगला' के भी दर्शन किए।

इसके बाद हम लोग श्री मंदिर की 'मुक्तिमंडप सभा' के नीचे छाँव में थोड़ी देर बैठकर प्रतीक्षा करने लगे, वहाँ लगभग दस- पंद्रह मिनट के विश्राम के बाद हमलोग फिर से कतार में खड़े होने के लिए आ गये। तब तक भीड़ बहुत कम हो गई थी। फिर भी हमें दस- पंद्रह मिनट के लिए कतार में खड़ा रहना पड़ा। उसके बाद श्रद्धालुओं की भीड़ के साथ हम भी श्री मंदिर के अंदर गए। वहाँ गरुड़ स्तंभ के पास में खड़े होकर "श्री जगन्नाथ जी" के दर्शन करने की कोशिश की और सामान्य रूप में सफल भी हुए।

हमें पता चला कि भगवानजी का साहाणमेला दर्शन चल रहा है। दिन में कम से कम एक बार इस दर्शन की सुविधा भक्तजनों को दी जाती है। जिसमें सभी लोग श्री जगन्नाथ, श्री बलभद्र और सुभद्राजी का बहुत पास से दर्शन कर सकते हैं। हम दोनों भी उस भीड़ में शामिल हो गए और धीरे-धीरे अंदर की ओर जाने लगे। हम दोनों सहेली बाम-पार्श्व की दीवार पकड़ कर आगे बढ़ रही थी ताकि भीड़ में खो न जाये फिर हमें श्री जगन्नाथजी, श्री बलभद्रजी और सुभद्राजी के दिव्य दर्शन प्राप्त हुए और हम कृतार्थ हो गए :-

***"नीलांचल निवासाय नित्याय परमात्मने,
बलभद्र सुभद्राभ्याम श्री जगन्नाथाय ते नमः"***

वहाँ श्री जगन्नाथजी के सेवारत पुजारियों के कंठ से यही मंत्र गूँज रहा था, सभी भक्तजन भी अपनी अपनी रुचि से श्री विष्णु भगवान के असंख्य नामों और स्तुतियों की वंदना कर रहे थे। हम लोगों ने भीड़ में किसी प्रकार से आरती और प्रसादी तुलसी पाने की कोशिश की और वहाँ से निकल पड़े। बाहर आकर हमने चैन की साँस ली।

इसके बाद हमने वहाँ 'मुक्ति मंडप सभा' के सामने स्थित विग्रह के दर्शन किये। उसके बाद हम दोनों ने वहाँ पर स्थित "माँ विमला" के दर्शन किये। विमला देवी का यह मंदिर भारतवर्ष में स्थित इक्यावन शक्तिपीठों में से एक है। ओडिशा में जाजपुर जिले के जाजपुर शहर में स्थित "श्री विरजा देवी" का मंदिर भी एक प्रसिद्ध शक्तिपीठ है, यहाँ पर पुराण में वर्णित सती देवी की



सुरभि 23वां अंक



नाभी गिरी थी इसलिए इस स्थान को “नाभिगया” के नाम से भी जाना जाता है। माँ विमला के प्रवेशद्वार मंडप के दोनों ओर नर्तक गणेश और कार्तिकेय भगवान की बहुत ही सुंदर मूर्तियाँ हैं। काले पत्थर में बनी ये दोनों मूर्तियाँ भक्तों के मन को मोह लेती हैं। इस प्रकार से दर्शन करते हुए हम दोनों सहेलियों ने अंदर गर्भ-गृह में जाकर “विमला माता” के दर्शन किए और प्रणाम करके बाहर आ गए। इस मंदिर की नाट्यशाला में चारों ओर दस महाविद्याओं के चित्र ओडिशा पारंपरिक पट्ट चित्रकला शैली में चित्रित किये गए हैं।

इसके बाद हम दोनों सहेली बाम पार्श्व में स्थित “साक्षीगोपालजी” के दर्शन किए और आगे बढ़े। सामने लक्ष्मीमाता के मंदिर में जाने से पहले हम दोनों ने श्रीमंदिर की उत्तर दिशा में स्थित चबूतरे से उठकर वहाँ छाँव में कुछ देर बैठ गए। वहाँ बंदरों की हरकतें देख कर सभी लोग खुश हो रहे थे और उन्हें कुछ खाना भी दे रहे थे। इस तरह थोड़ा विश्राम कर हम नीचे आकर “माँ लक्ष्मी” के दर्शन के लिए आगे निकले पर वहाँ धूप में लम्बी लगी कतार को देखकर अंदर नहीं गये। हम दोनों इस मंदिर के प्रवेशद्वार मंडप जिसे “मुखशाला” कहा जाता है उसके रास्ते में जाकर जालीदार कपाट से अंदर स्थित “लक्ष्मी देवी” के दर्शन करने लगे और वहीं से प्रणाम करके उस मंडप में भी थोड़ी देर बैठ गए। ऐसी मान्यता है कि लक्ष्मी देवी के दर्शन करके वहाँ से तुरंत नहीं जाना चाहिए, वह रुठ जाती है। इस संसार में कोई भी जानबूझकर नाराज करना नहीं चाहता है।

थोड़ी देर बाद हम वहाँ से उठ गए और महाप्रसाद का सेवन करने के लिए आनंद बाजार की तरफ चलने लगे। आनंद बाजार में बहुत सारे भक्तगण श्रीनाथजी के दोपहर के भोग की प्रतीक्षा कर रहे थे, हम लोग अधिक प्रतीक्षा नहीं कर सके जो भी प्रसाद मिला वही खरीद कर खा लिया।

वहाँ बाहर निकलकर हम दोनों सहेली “श्री जगन्नाथ मंदिर की उत्तर दिशा में स्थित “कोइलि वैकुंठ” की तरफ गए। यह स्थान भगवानजी का पुष्प उद्यान होने के साथ-साथ उनका “समाधि स्थल” भी है। प्रत्येक बारह साल के बाद भगवान जी की “नव कलेवर” नीति अनुष्ठित होती है। इस नीति या उत्सव में श्री जगन्नाथ, श्री बलभद्र, माँ सुभद्रा देवी और सुदर्शन चक्र जी के नीम के पेड़ से बनी प्रतिमाओं की प्राण- प्रतिष्ठा होती है एवं इसके उपरांत पुरातन विग्रहों को यहीं पर विश्राम दिया जाता है। यह स्थान कुछ वटवृक्षों और कुछ बेल-वृक्षों से शोभित है, जो कि





भगवान श्री कृष्ण की अंतिम लीला के बारे में स्मरण कराता है। यहीं पर मंदिर प्रशासन की तरफ से बहुत से तुलसी के पौधे लगाए गए हैं जिन्हें बंदरो से सुरक्षित रखने के लिए एलुमिनियम के जालीदार दरवाजे लगाए गए हैं।

यहीं पर कुछ देर घूम कर हम दोनों उत्तर के द्वार से बाहर आने लगे। ठीक उत्तर द्वार से पहले बाम-पार्श्व में एक मंदिर देखकर उत्सुकतावश वहाँ दर्शन के लिए गए, पता चला कि वह माता “शीतला देवी” का मंदिर है। ठीक मंदिर के सामने लकड़ी के भारी पट्टों से ढका हुआ एक



कुआँ है, जिसका नाम “सोनाकुआँ” मतलब सोने का कुआँ है। श्री जगन्नाथ जी के “स्नान पूर्णिमा” में इसी कुँए से एक सौ आठ घड़े पानी निकाला जाता है जिससे भगवान जी के स्नान उत्सव को संपन्न किया जाता है। इस तरह दर्शन करके हम दोनों बाहर आ गए।

श्री मंदिर के उत्तर द्वार से बाहर आकर हम दोनों सहेली हॉल में बनी श्रीमंदिर परिक्रमा प्रकल्प के रास्ते में आगे जाने लगी, यह परिक्रमा प्रकल्प (श्री जगन्नाथ मंदिर मेगा कोरीडोर) निश्चित ही ओडिशा सरकार के द्वारा श्रीमंदिर के आधुनिक विकास की ओर भविष्य में एक मील का पत्थर साबित होगा। इसमें श्री मंदिर के चारो ओर बहुत ही चौड़े पत्थर के रास्ते बनाये गए हैं। दक्षिण और पश्चिम की तरफ पुरुष और महिलाओं के लिए अलग-अलग से बहुत सारे शौचालयों का निर्माण भी किया गया है। शायद रथ यात्रा की पाँच या छह लाख की भीड़ को ध्यान में रखकर यह किया गया होगा। इसके साथ बीच बीच में सजावट के लिए पौधे भी लगाए गए हैं। चारो ओर पर्याप्त खुला स्थान होने के कारण बाहर से श्रीमंदिर का दृश्य भी अत्यंत मनमोहक लगता है। शाम के समय श्री मंदिर के ऊपर बहुत सारी रोशनी (लाइट्स) डालने की भी व्यवस्था की गई है जिससे इसकी शोभा और भी नयनाभिराम बन जाती है।



सुरभि 23वां अंक



इस तरह से हम दोनों सहेलियों की श्री मंदिर और श्री जगन्नाथ जी के दर्शन की यात्रा समाप्त हुई और हम बाहर से पुनः “श्री पतितपावन जी” को प्रणाम कर खुशी- खुशी अपने लॉज में लौट आए।



सुरभि 23वां अंक



जीआई टैग

श्रीमती आँखी सरकार

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



ओडिशा के 07 (सात) उत्पाद जिन्होंने 2024 में जीआई टैग अर्थात भौगोलिक संकेत हासिल किया है। वस्तुओं के भौगोलिक संकेत किसी उत्पाद की उत्पत्ति के स्थान को दर्शाते हैं। वे किसी विशिष्ट भौगोलिक इलाके, क्षेत्र या देश में इसकी उत्पत्ति के तथ्य के कारण गुणवत्ता और विशिष्टता का आश्वासन देते हैं। भारत में, उद्योग और आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग, वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय, जीआई पुरस्कार देता है।

जीआई पंजीकरण किसी क्षेत्र के उत्पाद को दिया जाता है, किसी व्यापारी को नहीं, लेकिन एक बार जब किसी उत्पाद को पंजीकरण मिल जाता है, तो उत्पाद का कारोबार करने वाले व्यापारी उसे जीआई लोगो के साथ बेचने के लिए आवेदन कर सकते हैं। अधिकृत व्यापारियों में से प्रत्येक को एक अद्वितीय जीआई नंबर सौंपा जाता है। यदि कोई अनधिकृत व्यापारी उस नाम के तहत उत्पाद बेचने की कोशिश करता है, तो उन पर सामान के भौगोलिक संकेत (पंजीकरण और संरक्षण) अधिनियम, 1999 के तहत मुकदमा चलाया जा सकता है।

जीआई टैग, उत्पादों की नकल को रोककर स्थानीय उत्पादकों और कारीगरों के हितों की रक्षा करने में भी मदद करते हैं। यहाँ सात उत्पादों की सूची दी गई है आइए हम सब जानें कि उन्हें क्या विशिष्ट बनाता है:

(1) कपडगंडा शॉल:- ओडिशा के रायगढ़ और कालाहांडी जिलों में नियमगिरि पहाड़ियों में विशेष रूप से कमजोर आदिवासी समूह (पीवीटीजी) डोंगरिया कोंध जनजाति की महिलाओं द्वारा बुना और कढ़ाई किया गया शॉल डोंगरिया कोंध की समृद्ध आदिवासी विरासत को दर्शाता है।

इसमें एक मटमैले सफेद मोटे लाल, पीले और हरे रंग के धागों से कढ़ाई है, जिसमें प्रत्येक रंग का अपना महत्व हरा रंग, पहाड़ों और पहाड़ियों का प्रतीक है पीला, शांति और खुशी का प्रतीक है। लाल रक्त का प्रतीक है। शॉल में ज्यादातर रेखाएं और



कपड़े पर की जाती होता है। और



सुरभि 23वां अंक

त्रिकोण होते हैं, जिन्हें समुदाय के लिए पहाड़ों के महत्व का प्रतिबिंब माना जाता है। शॉल को पुरुष और महिलाएं दोनों पहनते हैं और डोंगरिया इसे अपने परिवार के सदस्यों को प्यार और स्नेह के प्रतीक के रूप में उपहार में देते हैं।

(2) लांजिया सौरा पेंटिंग:- सबसे पुरानी जनजातीय कला रूपों में से एक, पेंटिंग को इंडिटल के नाम से भी जाना जाता है। यह कला कलाकृतियाँ

अपनी सुंदरता, जुड़ाव और प्रतिमा विज्ञान कला रूप लांजिया सौरा एक पीवीटीजी है जो मुख्य रहती है। ये पेंटिंग घरों की मिट्टी की दीवारों पर चित्रित बाहरी भित्तिचित्रों के रूप में हैं। लाल-मैरून पृष्ठभूमि पर सफेद पेंटिंग बनी हुई हैं।



सौंदर्यशास्त्र, कर्मकांडीय के लिए प्रसिद्ध हैं। यह समुदाय से संबंधित है, जो रूप से रायगढ़ा जिले में

ऐसा माना जाता है कि लांजिया सौरा अपने देवताओं और पूर्वजों के प्रति आभार व्यक्त करने और अपने समुदाय की भलाई के लिए अपनी दीवारों को इंडिटल कलाकृतियों से रंगते हैं। प्रकृति के प्रति आदिम जनजातियों के प्रेम और स्नेह को दर्शाते हुए, उनमें आदिवासी मानव, पेड़, जानवर, पक्षी, सूर्य और चंद्रमा जैसे विषय शामिल होते हैं।

(3) कोरापुट काला जीरा चावल:- काले रंग के चावल की किस्म, जिसे 'चावल का राजकुमार' भी कहा जाता है, अपनी सुगंध, स्वाद, बनावट और पोषण मूल्य के लिए प्रसिद्ध है। कोरापुट क्षेत्र के आदिवासी किसानों ने लगभग 1,000 वर्षों से चावल की संरक्षित रखा है। चूंकि चावल के दाने, जीरे के समान इसलिए इसे काला जीरा भी कहा जाता है। इस चावल के सेवन से हीमोग्लोबिन के स्तर को बढ़ाने में मदद और शरीर के उपापचय में सुधार होता है। कोरापुट काला चावल के किसानों और उत्पादकों ने खेती में पारंपरिक ज्ञान और प्रथाओं का पालन किया है। प्राचीन कहानियाँ चावल की विभिन्न किस्मों के सेवन से होने वाले शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक आनंद के बारे में भी बताती हैं।



किस्म को होते हैं, की किस्म मिलती है जीरा

(4) सिमिलिपाल काई चटनी:- लाल बुनकर चींटियों से बनी चटनी ओडिशा के मयूरभंज जिले के आदिवासियों का पारंपरिक व्यंजन है। ये चींटियाँ मयूरभंज के जंगलों में पाई जाती हैं, जिनमें सिमिलिपाल के जंगल भी शामिल हैं जो एशिया का दूसरा सबसे बड़ा जीवमंडल है। औषधीय और पोषण मूल्य से भरपूर, चटनी को प्रोटीन, कैल्शियम, जस्ता, विटामिन बी -12, लौह, मैग्नीशियम, पोटेशियम इत्यादि जैसे पोषक तत्वों का अच्छा स्रोत माना जाता है। आदिवासी, चींटियों को हाथ से सिल बट्टा (पीसने का पत्थर) पर पीसकर इसकी चटनी तैयार करते हैं। मयूरभंज के आदिवासी भी लाल चींटियाँ और चींटियों से बनी चटनी बेचकर अपनी आजीविका कमाते हैं। उनका मानना है कि इसके सेवन से रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है और बीमारियों से बचाव होता है।



(5) नयागढ़ कांतिमुंडी बैंगन:- नयागढ़ कांतिमुंडी बैंगन तनों और पूरे पौधे पर कांटेदार कांटों के लिए जाना जाता है। हरे और गोल फलों में अन्य जीनोटाइप की तुलना में अधिक बीज होते हैं। यह अपने अनूठे स्वाद और अपेक्षाकृत कम समय में पकने के लिए प्रसिद्ध है। पौधे प्रमुख कीटों के प्रति प्रतिरोधी हैं और इन्हें न्यूनतम कीटनाशकों के साथ उगाया जा सकता है।



राज्य के नयागढ़ जिले में इसकी बड़े पैमाने पर खेती की जा रही है। उत्पादकों को प्रति हेक्टेयर 200 क्विंटल तक की उपज मिल रही है और लगभग 60 रुपये प्रति किलोग्राम की दर से बेच रहे हैं। ऐतिहासिक अभिलेखों से यह भी पता चलता है कि स्थानीय लोगों को पहाड़ी इलाकों से बैंगन मिलते थे। उन्होंने इससे बीज एकत्र किए और लगभग 100 साल पहले पौधा उगाना शुरू किया।

(6) ओडिशा खजूरी गुड़ा:- ओडिशा का "खजूरी गुड़ा" या गुड़ खजूर, खजूर के पेड़ों से निकाला गया एक प्राकृतिक स्वीटनर है और इसकी उत्पत्ति गजपति जिले में परंपरागत रूप से, गुड़ को 'पाटली गुड़' नामक समलम्बाकार किया जाता है और यह जैविक प्रकृति का होता है। यह गहरे भूरे रंग का होता है और इसका स्वाद अनोखा होता है।



(7) ढ़कनाल मगजी:- ढ़कनाल मगजी एक प्रकार की मिठाई है जो भैंस के दूध के पनीर से बनाई जाती है, जो दिखने, स्वाद, फलेवर और आकार की दृष्टि से विशेषताओं वाली होती है। इसमें अद्वितीय पोषण मूल्य भी हैं जो इसे अन्य पनीर-आधारित मिठाइयों से अलग करते हैं।



कहा जाता है कि ब्रिटिश काल के दौरान हजारों लोग पशुपालन, विशेषकर भैंस पालन के माध्यम से अपनी आजीविका कमा रहे थे। यह क्षेत्र भैंस के दूध उत्पादन का आंतरिक क्षेत्र था और दूध और दही के बाद पनीर तीसरा सबसे बड़ा उत्पादन था। गोंदिया ब्लॉक के मंदार-सादंगी क्षेत्र को मीठे पदार्थ की उत्पत्ति का केंद्र माना जाता है, जो अब पूरे जिले में फैल गया है।



भारतीय विरासत और संस्कृति की मिसाल बालीयात्रा

श्री पुरुषोत्तम गिरि
वरिष्ठ अनुवादक



सदियों पुरानी बालीयात्रा के पीछे एक समृद्ध इतिहास है। हाल ही में, माननीय प्रधानमंत्री जी ने G20 शिखर सम्मेलन के मौके पर बाली में भारतीय प्रवासियों को अपने संबोधन में प्राचीन कलिंग और दक्षिण पूर्व एशिया के बीच सदियों पुराने संबंधों की स्मृति में कटक में महानदी के तट पर आयोजित वार्षिक बालीयात्रा का उल्लेख किया था। जातव्य है कि वर्ष 2022 की बालीयात्रा को ओरिगेमी, कागज की सुंदर मूर्तियों के निर्माण की प्रभावशाली उपलब्धि हासिल करने हेतु गिनीज़ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में सम्मिलित किया गया।

कलिंग साम्राज्य का दक्षिण पूर्व एशिया के साथ संबंध स्थापित करने में महत्वपूर्ण स्थान रहा है। इन यात्राओं का उद्देश्य व्यापार तथा सांस्कृतिक प्रसार होता था। कलिंग वासियों ने 'बोइता' नाम की बड़ी नावों का निर्माण किया और इनकी मदद से उन्होंने इंडोनेशियाई द्वीपों के साथ व्यापार किया। इन जहाजों के ढाँचे तांबे के होते थे और इनमें एक बार में सात सौ आदमी सवार होते थे। दिलचस्प बात यह है कि कभी बंगाल की खाड़ी को कलिंग सागर के रूप में जाना जाता था क्योंकि यह कलिंग के इन जहाजों से भरी होती थी। समुद्री मार्गों पर कलिंग वासियों के प्रभुत्व को इस तथ्य से समझा जा सकता है कि कालिदास ने अपनी 'रघुवंश' नामक रचना में कलिंग के राजा को 'समुद्र का देवता' कहा है।





ओडिशा के समृद्ध समुद्री इतिहास को याद करने वाला त्योहार, बालीयात्रा, पूरे राज्य में मनाया जाता है। ऐतिहासिक शहर कटक में, कार्तिक पूर्णिमा के दिन (कार्तिक महीने, अर्थात् अक्टूबर-नवंबर, की पूर्णिमा) से शुरू होकर एक सप्ताह तक चलने वाला कार्यक्रम आयोजित किया जाता है। यह उत्सव कटक नगर में महानदी के किनारे गडगडिया घाट पर मनाया जाता है।

बालीयात्रा, शाब्दिक रूप से 'बाली की यात्रा' देश के सबसे बड़े उत्सवों में से एक है। यह प्रतिवर्ष प्राचीन कलिंग (आज का ओडिशा), बाली तथा अन्य दक्षिणी और दक्षिण पूर्व एशियाई क्षेत्रों जैसे जावा, सुमात्रा, बोर्नियो, बर्मा (म्यांमार) और सीलोन (श्रीलंका) के बीच 2,000 वर्ष पुराने समुद्री और सांस्कृतिक संबंधों की स्मृति के उपलक्ष्य में आयोजित किया जाता है। इतिहासकारों के अनुसार, कलिंग और दक्षिण पूर्व एशिया के बीच व्यापार की लोकप्रिय वस्तुओं में काली मिर्च, दालचीनी, इलायची, रेशम, कपूर, सोना और आभूषण शामिल थे।

बालीयात्रा उन विशेषज्ञ नाविकों की सरलता और कौशल का जश्न मनाती है जिन्होंने कलिंग को अपने समय के सबसे समृद्ध साम्राज्यों में से एक बनाया।

कलिंग साम्राज्य (वर्तमान ओडिशा) अपने गौरवशाली समुद्री इतिहास के लिए जाना जाता है। कलिंग की भौगोलिक स्थिति के कारण इस क्षेत्र में चौथी एवं पांचवी शताब्दी ईसा पूर्व में बंदरगाहों का विकास देखा गया था। कुछ प्रसिद्ध बंदरगाहों, ताम्रलिपती, माणिकपटना, चेलितालो, पालूर और पिथुंडा ने भारत को समुद्र के माध्यम से अन्य देशों के साथ जुड़ने की अनुमति दी थी। जल्द ही कलिंग के श्रीलंका, जावा, बोर्नियो, सुमात्रा, बाली और बर्मा के साथ व्यापार संबंध स्थापित हुए। बाली ने चार द्वीपों का एक हिस्सा बनाया, जिन्हें सामूहिक रूप से सुवर्णद्वीप कहा जाता था, इसे आज इंडोनेशिया के नाम से जाना जाता है। कलिंग के लोग अक्सर बाली द्वीप के साथ व्यापार करते थे। वस्तुओं के व्यापार ने विचारों और विश्वासों के आदान-प्रदान को भी जन्म दिया।

ओडिशा व्यापारियों ने बाली में बस्तियों का गठन किया और इसकी संस्कृति एवं नैतिकता को प्रभावित किया जिससे इस क्षेत्र में हिंदू धर्म का विकास हुआ। हिंदू धर्म, बाली अवधारणाओं के साथ अच्छी तरह से मिश्रित है और आज भी प्रचलित है। बाली के लोग शिव, विष्णु, गणेश और ब्रह्मा जैसे विभिन्न हिंदू देवताओं की पूजा करते हैं। भगवान शिव को पीठासीन देवता माना जाता है और बुद्ध के बड़े भाई माने जाते हैं। वे शिवरात्रि, दुर्गा पूजा और सरस्वती पूजा जैसे हिंदू





त्योहार भी मनाते हैं। बाली में मनाया जाने वाला 'मसकापन के तुकड़' उत्सव ओडिशा में बालीयात्रा उत्सव के समान है। दोनों को उनके पूर्वजों की याद में मनाया जाता है।

ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी के अंत तक भारतीय नाविकों ने मानसूनी हवाओं और समुद्री धाराओं के बारे में काफी कुछ सीख लिया था। ओडिशा की चिल्का झील इस यात्रा के लिए एक महत्वपूर्ण प्रारंभिक बिंदु थी। यह एक बड़ी खारे पानी की झील है जिसका समुद्र की ओर एक छोटा सा द्वार है। इसलिए कलिंग के नाविक इस झील को एक सुरक्षित बंदरगाह के रूप में इस्तेमाल किया करते थे। आज भी झील के किनारे बिखरे हुए प्राचीन मिट्टी के बर्तनों के टूटे हुए ढेर मिलने की संभावना है।

उल्लेखनीय है कि जहाज सीधे इंडोनेशिया के लिए रवाना नहीं होते थे। इसके बजाय उत्तर-पूर्वी मानसूनी हवाओं का उपयोग किया जाता था जो नवंबर के मध्य से श्रीलंका के तट तक बहती थी। यह पहले से ही एक प्रसिद्ध मार्ग था और व्यापारी संभवतः व्यापार के लिए भी इसी रास्ते पर रुकते थे। श्रीलंका में, हिंद महासागर को पार करके सुमात्रा के उत्तरी सिरे (जिसे स्वर्णद्वीप, या संस्कृत ग्रंथों में सोने का द्वीप कहा जाता है) तक जाने के लिए समुद्री धाराओं का उपयोग करने से पहले जहाजों में ताज़े पानी की आपूर्ति की जाती थी। यहाँ से जहाज मलक्का जलडमरूमध्य से पालेमबांग की ओर जाने और बोर्नियो और वियतनाम के लिए समुद्री मार्ग अपनाने का विकल्प चुनते थे। वैकल्पिक रूप से, वे सुमात्रा के पश्चिमी तट से होते हुए बाली और जावा (जिसे यवद्वीप, या जौ/अनाज का द्वीप कहा जाता है) तक दक्षिण की ओर जाते थे।

अपनी खरीद और बिक्री समाप्त करने के बाद, अधिकांश जहाज काउंटर करंट का उपयोग करके श्रीलंका वापस चले जाते थे और फिर ओडिशा लौट आते थे। यदि नाविक नवंबर के मध्य में ओडिशा से रवाना होते थे, तो अनुमानतः वे जनवरी के मध्य तक जावा और बाली द्वीपों तक पहुंच जाते थे। मार्च के मध्य में अपनी वापसी यात्रा शुरू करने से पहले अब उनके पास अपना व्यवसाय संचालित करने के लिए दो महीने का समय होता था। इससे उन्हें मई में शुरुआती दक्षिण-पश्चिम मानसूनी हवाओं को पकड़ने के लिए समय पर श्रीलंका लौटने की अनुमति मिल जाती थी जो उन्हें घर वापस ले आती थी।

कलिंग के व्यापारी इंडोनेशिया की यात्रा करने वाले अकेले नहीं थे। वहाँ तमिल, आंध्र और बंगाल तटों के व्यापारी भी थे। भारत के उत्तर-पश्चिम से ऐसे घोड़ा व्यापारी भी थे जो बंगाल के



तंप्रालिप्ति बंदरगाह से होते हुए जावा और सुमात्रा की ओर रवाना होते थे। हालाँकि, प्रारंभिक चरण में, कलिंग के व्यापारियों का ही प्रभुत्व था।

जब प्राचीन नाविक इंडोनेशिया के लिए समुद्री व्यापार के लिए रवाना होते थे तो परिवार, विशेष रूप से महिलाएं और बच्चे, इकट्ठा होते थे और पानी में तेल कागज की नाव रखते थे। मैंने पास एक समुद्र तट पर यह आस-पास के गाँवों से बड़ी संख्या से पहले ही अपनी छोटी नावें उन्हें तैरते हुए देखने के लिए आ हवा चली और पूर्णिमा के चंद्रमा ने टकराती हुई लहरों को झिलमिलाने वाला बना दिया। मैंने अपनी कागज की नाव को बहते हुए देखा। शायद प्राचीन नाविकों के परिवार इसी तरह अपने प्रियजनों को अलविदा कहते होंगे।



जलाशय के किनारे के दीपक के साथ कोणार्क मंदिर के अनुष्ठान देखा। मैं लोग सुबह होने पानी में डालने और गए। उत्तर से ठंडी

सबसे महत्वपूर्ण भारतीय निर्यात सूती कपड़ा था। दक्षिण पूर्व एशिया में उत्खनन से कारेलियन मोतियों और विभिन्न प्रकार के धातु के बर्तनों के प्रमाण भी मिले हैं। पहली शताब्दी ईस्वी तक भारतीय व्यापारी अपने साथ भूमध्यसागरीय और पश्चिम एशियाई उत्पाद भी ला रहे थे, जिन्हें उन्होंने रोमन, यूनानियों और अरबों से खरीदा था। बाली में सेम्बिरन में पाई गई कलाकृतियों से स्पष्ट रूप से पता चलता है कि यह पुदुचेरी के ठीक बाहर, एक इंडो-रोमन बंदरगाह, अरिकामेडु के निकट संपर्क में था।

भारतीय आयात में वियतनाम के बंदरगाहों के माध्यम से चीनी रेशम और सुमात्रा से कपूर शामिल थे। इंडोनेशिया के द्वीप लौंग, जायफल और अन्य मसालों के स्रोत थे। मध्यकालीन यूरोपीय लोगों द्वारा 'भारतीय' समझे जाने वाले कई मसाले वास्तव में काली मिर्च को छोड़कर इंडोनेशिया से थे, जो भारत के दक्षिण-पश्चिमी तट पर उगता है। अठारहवीं सदी के अंत तक, दुनिया में लौंग की पूरी आपूर्ति मालुकु समूह के टर्नेट और टिडोर के छोटे द्वीपों से होती थी।

दक्षिण पूर्व एशिया के साथ व्यापार संबंधों ने आश्चर्यजनक रूप से सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा दिया। कुछ शताब्दियों के भीतर इस क्षेत्र पर भारतीय सभ्यताओं अर्थात् बौद्ध और



हिंदू धर्म, महाकाव्य महाभारत और रामायण, संस्कृत भाषा, लिपियाँ, मंदिर वास्तुकला इत्यादि का मजबूत प्रभाव पड़ा। इस्लाम, यूरोपीय औपनिवेशिक शासन और उत्तर-औपनिवेशिक आधुनिकता के बाद के प्रभाव के बावजूद, प्राचीन भारत का प्रभाव स्थान और व्यक्तिगत नामों, आमतौर पर उपयोग किए जाने वाले शब्दों और कला और शिल्प में जीवित है। म्यांमार से लेकर वियतनाम तक बौद्ध धर्म अभी भी प्रमुख धर्म है, जबकि हिंदू धर्म बाली जैसे क्षेत्रों में जीवित है।

कुछ ऐसी सांस्कृतिक कलाकृतियाँ हैं जो दोनों क्षेत्रों के बीच संपर्क के शुरुआती चरण से थोड़े बदलाव के साथ बची हुई प्रतीत होती हैं। कोई भी बाली, श्रीलंका और आंध्र-ओडिशा तट के पारंपरिक मुखौटों की समानता से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। प्राचीन नाविक समुद्र पार करते समय लंबी रातों के दौरान अपने जहाज का उपयोग करके छाया-कठपुतली नाटकों का प्रदर्शन करके एक-दूसरे का मनोरंजन करते थे, जब वे दूर देशों की खतरनाक यात्रा करते थे तो सांस्कृतिक जड़ें उन्हें सहारा देती थीं।

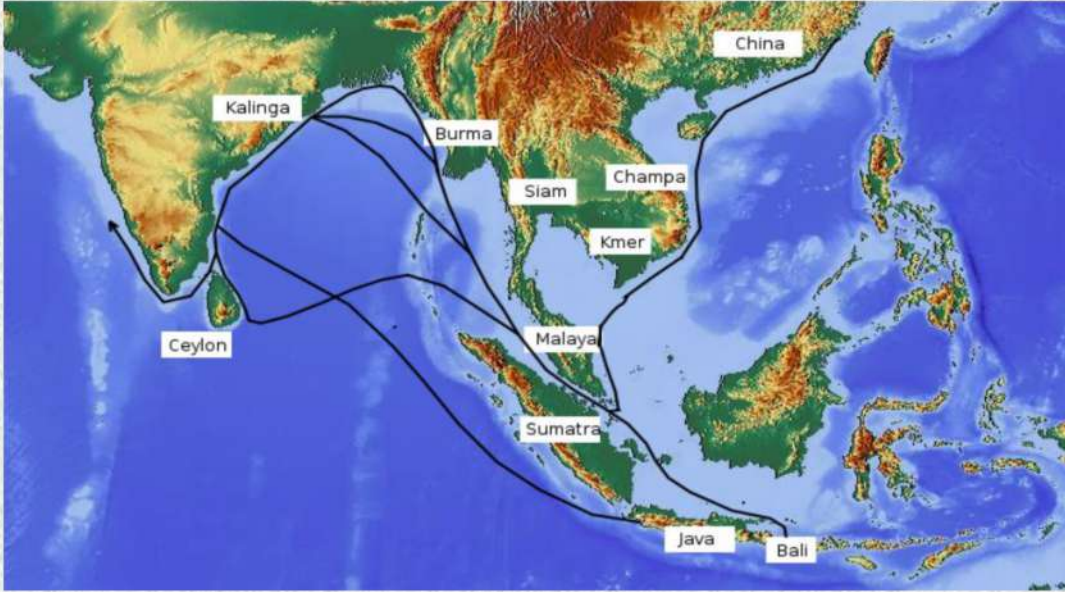
भारतीय सभ्यता पूर्व के प्रभावों से कई मायनों में समृद्ध हुई। एक सामान्य उदाहरण पान चबाने की प्रथा है (सुपारी के साथ पान के पत्ते, आमतौर पर थोड़े से नींबू और अन्य सामग्री के साथ)। हालाँकि यह पूरे भारतीय उपमहाद्वीप में सामान्य बात है, सुपारी, जिसे हिंदी में भी 'सुपारी' कहा जाता है, मूल रूप से दक्षिण पूर्व एशिया से है और इसे पूरे क्षेत्र में और उत्तर में ताइवान तक चबाया जाता है। लेकिन हाल के वर्षों में, दक्षिण पूर्व एशिया के शहरी क्षेत्रों में यह कम लोकप्रिय हो गया है। फिर भी, पत्ती और अखरोट एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक भूमिका निभाते हैं और कई समारोहों में उपयोग किए जाते हैं। बाली में आज भी शादियों में पान खाया जाता है और फिलीपींस में बूढ़े ग्रामीणों को उन्हें चबाते हुए देखा जा सकता है। वियतनामी लोग भी इसका उपयोग विवाह संबंधी कई समारोहों में करते हैं।

बालीयात्रा का अपने आप में सांस्कृतिक और ऐतिहासिक तत्वों के अलावा एक महत्वपूर्ण व्यावसायिक आयाम है। इस दौरान लोग ऑटोमोबाइल और इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों से लेकर स्थानीय कारीगर के उत्पादों तक सब कुछ तुलनात्मक रूप से कम कीमतों पर खरीदते हैं। ओडिशा के लोग अपने पूर्वजों की यात्रा के प्रतीकात्मक संकेत के रूप में महानदी, ब्राह्मणी नदी, अन्य नदियों के किनारे, तालाबों के पास रंगीन कागज से बनी लघु खिलौना नौकाओं को तैराने के लिए इकट्ठा होते हैं।



कटक में, बालीयात्रा प्रति वर्ष बाराबती किला क्षेत्र के पास एक बड़े मेले के रूप में मनाया जाता है जिसमें कई सांस्कृतिक कार्यक्रम, खेलों के स्टॉल, विभिन्न खेल और ओडिया व्यंजनों की बिक्री करने वाले खाद्य स्टॉल होते हैं। इस त्योहार के लिए, ओडिशा के लोग अपने गौरवशाली समुद्री इतिहास का जश्न मनाने हेतु रंगीन पोशाक में बड़ी संख्या में इकट्ठा होते हैं। दूर-दूर से पर्यटक ओडिशा की संस्कृति को देखने के लिए बालीयात्रा के दौरान इकट्ठा होते हैं।

ओडिशा प्रशासन ने देश-विदेश से आए पर्यटकों के लिए राज्य की संस्कृति और समृद्धि का पूर्ण रूप एवं अनुभव प्रदान करने के लिए त्योहार के दौरान कई पर्यटन और सुविधाजनक तथा सुलभ पैकेज प्रदान करता है जोकि बहुत ही प्रशंसनीय एवं सराहनीय कदम है।



पर्यटकों एवं पर्यावरण प्रेमियों के लिए स्वर्ग हैं

ओडिशा की 06 रामसर साइटें

श्री अमित कुमार प्रधान
वरिष्ठ लेखापरीक्षक



रामसर स्थल क्या होते हैं? रामसर वह आर्द्रभूमि या नम भूमि हैं, जिन्हें रामसर कन्वेंशन के तहत "अंतर्राष्ट्रीय महत्व" दिया जाता है। अंतर्राष्ट्रीय महत्व की आर्द्रभूमियों पर रामसर सम्मेलन विशेष रूप से जलपक्षी आवास के रूप में आर्द्रभूमि के संरक्षण और सतत उपयोग के लिए एक अंतर्राष्ट्रीय संधि है। इसे वेटलैंड्स पर कन्वेंशन के रूप में भी जाना जाता है। इसका नाम ईरान के रामसर शहर के नाम पर रखा गया है, जहां 1971 में कन्वेंशन पर हस्ताक्षर किए गए थे।

यह ओडिशा पर्यटकों के साथ-साथ पर्यावरण प्रेमियों के लिए भी स्वर्ग से कम नहीं है। अपने भव्य मंदिरों, संग्रहालयों, मठों, समुद्र तट, जंगलों, पहाड़ियों के अलावा सुंदर और साफ झीलों के लिए भी ये प्रदेश बेहद मशहूर है। ओडिशा छह रामसर साइटों का घर है। कुछ समय पहले ओडिशा की तम्पारा लेक, हीराकुंड जलाशय और अंशुपा लेक को रामसर साइट की मान्यता मिली थी। यहाँ की चिलिका झील, भितरकनिका राष्ट्रीय उद्यान और हीराकुंड बांध पहले से रामसर साइट की सूची में शुमार हैं ।

चिलिका झील:- चिलिका भारत का सबसे बड़ा (विश्व की दूसरी) खारे पानी का लैगून (अनूपझील) है। यह झील भारत के ओडिशा राज्य के पूर्वी तट में 1165 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैली हुई है। यह झील उत्तर-पूर्व में दया और भार्गवी घाटियों की खेती वाले मैदानों, उत्तर-पश्चिम और पश्चिम में पुरी और गंजम जिलों में पूर्वी घाट के जंगलों द्वारा, तथा दक्षिण और दक्षिण-पूर्व में बंगाल की खाड़ी द्वारा घिरी हुई है। लैगून को मुख्य रूप से लवणता और गहराई के आधार पर चार पारिस्थितिक क्षेत्रों में विभाजित किया जा सकता है - दक्षिणी क्षेत्र, मध्य क्षेत्र, उत्तरी क्षेत्र और बाहरी चैनल।



इसे 1981 में रामसर स्थल घोषित किया गया था। यह रामसर स्थल घोषित होने वाली पहली भारतीय झील थी। कई लुप्तप्राय दुर्लभ, खतरे वाली और भेद्य प्रजातियां यहां पाई जाती हैं, जैसे इरावाडी, डॉल्फिन, दुर्गोन्ग ग्रीन, समुद्री कछुआ, स्पूनबिल ब्लैकबक और फिशिंग कैट।

भीतरकनिका मैन्ग्रोव:- यह भारत के ओडिशा राज्य में भीतरकनिका राष्ट्रीय उद्यान में स्थित है। इसे 2002 में रामसर स्थल घोषित किया गया था। भीतरकनिका में मैंग्रोव के वन पाए जाते हैं, जो इंडो-मलायन मैन्ग्रोव समुदाय का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह भीतरकनिका मैंग्रोव दो नदियों ब्राह्मणी और बैतरणी के डेल्टा क्षेत्र में 650 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैली हुई है। यहाँ ज्वार नदियों और क्रीक से लेकर नदी द्वीपों) और अंतर्ज्वारीय क्षेत्र तक के विभिन्न प्रकार के वेटलैंड निवास देखने को मिलते हैं। गहिरमाथा समुद्र तट, जो भीतरकनिका वन्यजीव अभयारण्य की पूर्वी सीमा बनाता है, दुनिया में ऑलिव रिडले समुद्री कछुआ का सबसे बड़ा घोंसला बनाने वाला समुद्र तट है। ऑलिव रिडले समुद्री कछुआ। UCN रेड लिस्ट के अनुसार एक लुप्तप्राय प्रजाति है। गहिरामाथा में हर साल लगभग 5 लाख ऑलिव रिडले समुद्री कछुआ घोंसला बनाते हैं।



सतकोसिया घाटी:- सतकोसिया कण्ठ भारत के ओडिशा के अंगुल और बौध जिलों के बीच की सीमा पर स्थित है। यह बौध के सुनखानिया गांव से नीचे की ओर बदमुल गांव तक 22 किमी की लंबाई तक फैला हुआ है। यह दक्कन प्रायद्वीप और पूर्वी घाट के मिलन बिंदु पर नदियों, उष्णकटिबंधीय सदाबहार जंगलों का एक समूह है। यहां के आवास विभिन्न प्रकार की वनस्पतियों और जीवों का समर्थन करते हैं। उल्लेखनीय पौधों की प्रजातियों में आसन (टर्मिनलिया अल्टा), धौरा (एनोजीसस लैटिफोलिया), सिमिली (बॉम्बैक्स सीडबा), भारतीय कांटेदार बांस (बम्बुसा अरुंडिनेशिया) और कलकत्ता बांस (डेंड्रोकैलामस शामिल हैं। उल्लेखनीय पशु प्रजातियों में लाल मुकुट वाला कछुआ (बटागुर कचुगा), भारतीय संकीर्ण सिर खोल वाला कछुआ (चित्रा इंडिका), बाघ (पैंथेरा टाइग्रिस) पेट वाला टर्न (स्टर्ना एक्वेटिकाडा) शामिल हैं। यह कण्ठ महानदी द्वारा पूर्वी घाट को काटने से निर्मित होता है। कण्ठ की लंबाई लगभग 22 किमी (14 मील) है। 2007 में कण्ठ और आसपास के क्षेत्र को बाघ अभयारण्य घोषित किया गया था।

हीराकुद बाँध:- हीराकुद बाँध ओडिशा में महानदी पर निर्मित एक बाँध है। यह सम्बलपुर से 15 किमी दूर है। महानदी पर 1957 में निर्मित यह बाँध संसार का सबसे बड़ा एवं लंबा बाँध है। इसकी कुल लम्बाई 25.8 कि.मी. है। इस बाँध के पीछे विशाल जलाशय है जो एशिया की सबसे बड़ी कृत्रिम झील है।

यह परियोजना, भारत में शुरू की गयी कुछ आरम्भिक परियोजनाओं में से एक है। बाईं ओर लामडूंगरी पहाड़ी से लेकर 4.8 किमी० दूर चंदीली पहाड़ी तक मुख्य बाँध है। इसके दोनों तरफ दो अवलोकन मीनार हैं- गाँधी मीनार व नेहरू मीनार। इसके जलाशय की तट रेखा 639 कि.मी. लम्बी है। इस बाँध को बनाने में इस्तेमाल हुए मृदा, कंक्रीट व अन्य सामग्री से कश्मीर से कन्याकुमारी तथा अमृतसर से डिब्रूगढ़ तक करीब आठ मीटर चौड़ी सड़क बनाई जा सकती थी। हीराकुण्ड की झील एशिया की सबसे बड़ी मानवनिर्मित झील है। इस बांध की लंबाई 4801 मीटर है जिसमें 810 करोड़ घन मीटर जल संचित होता है। इसका उद्देश्य बाढ़ नियंत्रण एवं विद्युत उत्पादन करना है। हीराकुंड परियोजना पर हीराकुंड के अलावा दो और बांध उपस्थित हैं।

अंशुपा झील:- अंशुपा झील ओडिशा राज्य की दूसरी बड़ी झील है। यह झील महानदी के वाम भाग में कटक जिले में आती है और कटक से यह झील 40 km दूर स्थित है। इस झील के निकट सारदा नामक पर्वत और वाँस व आम के घने जंगल पाये जाते हैं और पर्यटकों के लिये अंशुपा में जलविहार तथा मछली पकड़ने की सुविधा है। यह झील ओडिशा की राजधानी भुवनेश्वर से मात्र 50 km दूर स्थित है। यह झील भारत की मुख्य मीठे जल की झीलों में से एक है। भूविज्ञानियों की माने तो यह झील कभी ब्राह्मणी नदी का अंश हुआ करती थी। ब्राह्मणी नदी ने जब गतिपद बदला तो यह हिस्सा नदी से अलग-थलग रह गया। संभवतः इसलिए इस झील का आकार घोड़े की नाल की तरह है जो इस बात की पुष्टि करता है।

तम्पारा झील:- तम्पारा झील गंजम जिले में स्थित ओडिशा राज्य की सबसे प्रमुख मीठे पानी की झीलों में से एक है। यहाँ की भूमि का क्षेत्र धीरे-धीरे वर्षा जल के प्रवाह से भर गया और इसे अंग्रेजों द्वारा "टैम्प" कहा गया और बाद में स्थानीय लोगों द्वारा इसे "तंपारा" कहा गया।

यह झील आर्द्रभूमि पक्षियों की कम से कम 60 प्रजातियों, मछलियों की 46 प्रजातियों, फाइटोप्लांकटन की कम से कम 48 प्रजातियों और स्थलीय पौधों और मैक्रोफाइट्स की सात से अधिक प्रजातियों का पालन करती है। तम्पारा झील एक महत्वपूर्ण पक्षी विहार है। यहाँ पर कई प्रजातियों के पक्षी पाए जाते हैं, आर्द्रभूमि दुर्लभ प्रजातियों जैसे कि साइप्रिनस कार्पियो, कॉमन पोचार्ड (अथ्या फेरिना) और रिवर टर्न (स्टर्ना औरंतिया) के लिए एक महत्वपूर्ण निवास स्थान है। प्रति वर्ष 12 टन की औसत मछली उपज के साथ, आर्द्रभूमि स्थानीय अनुमानित समुदायों के लिए आजीविका का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। यह आर्द्रभूमि पानी जैसे मछलियों के साथ-साथ कृषि और घरेलू उपयोग के लिए प्रावधान की सेवाएं भी उपलब्ध कराती है और यह एक प्रसिद्ध पर्यटन और मनोरंजन स्थल भी है।



ओडिशा की पाँच पारंपरिक और प्रसिद्ध साड़ियाँ

श्रीमती अर्पिता रॉय
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) का कार्यालय
हैदराबाद, शाखा: भुवनेश्वर



फैशन के दृष्टिकोण से, साड़ी सदियों से पारंपरिक भारतीय पोशाक रही है। साड़ी महिलाओं को एक ही समय में मोहक और सुंदर बनाती है। साथ ही साथ यह बहुत आरामदायक भी होती है। इसलिए शादियों या अन्य कार्यक्रमों में भारतीय महिलाएं साड़ी पहनना पसंद करती हैं।

ओडिशा भारत का एक पूर्वी राज्य है जो अपनी पारंपरिक हथकरघा साड़ियों के लिए प्रसिद्ध है। ओडिशा की साड़ियाँ इस राज्य की संस्कृति और शाश्वत परंपरा को दर्शाती हैं। सभी उत्सवों के लिए उड़िया साड़ियाँ चुन सकते हैं और उत्कृष्ट दिख सकते हैं।

उड़िया साड़ियाँ खूबसूरत रंगों और अलग-अलग पैटर्न में आती हैं। यही कारण है कि यह महिलाओं के बीच बहुत लोकप्रिय है। ओडिशा की सबसे प्रसिद्ध पारंपरिक साड़ियाँ हैं:

संबलपुरी साड़ी:- संबलपुरी साड़ी शायद न केवल भारत में बल्कि पूरी दुनिया में सबसे लोकप्रिय पारंपरिक उड़िया साड़ी है। यह 1980 के दशक के आसपास लोकप्रिय हुई जब भारत की दिवंगत प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी ने इस साड़ी को पहनना शुरू किया। संबलपुरी साड़ियाँ विशेष रूप से शंख (खोल), पाउला (फूल), और चक्र (पहिया) जैसे अपने पारंपरिक रूपांकनों के लिए प्रसिद्ध हैं।

उनकी जटिल बुनाई कौशल है, जिसे संबलपुरी संबलपुरी साड़ियाँ विशेषकर समृद्ध रंगों और गुणवत्ता



में टाई-डाई कला "बंधकला" का पारंपरिक शिल्प "इक्कत" के नाम से भी जाना जाता है। अपनी हथकरघा बुनाई, पारंपरिक रूपांकनों, वाले धागों के लिए जानी जाती हैं।

बोमकाई साड़ी/सोनेपुरी साड़ी:-बोमकाई साड़ी दो प्रकार की होती है - कपास वाली साड़ी रोजमर्रा के उपयोग के लिए होती है और रेशम वाली साड़ी शादी जैसे विशेष अवसरों के लिए होती है। इस साड़ी में पल्लू और बॉर्डर में थ्रेड वर्क का डिजाइन बहुत ही शानदार होता है। बोमकाई साड़ियाँ बहुत ही सरल होती हैं जिनमें आदिवासी संस्कृति की झलक होती है।

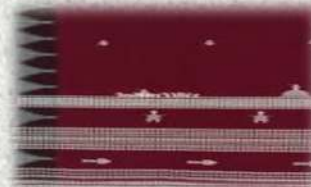


मूल रूप से, साड़ी को काले, लाल और सफेद रंग में रंगा जाता था। अब आप इन साड़ियों को उनकी मौलिकता बरकरार रखते हुए विभिन्न रंगों और डिजाइनों में प्राप्त कर सकते हैं। यह साड़ी व्यापक रूप से स्वीकार की जाती है और फैशन डिजाइनरों के बीच विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं।

इक्कत साड़ी:- इक्कत साड़ियां बाने के धागों से बनाई जाती हैं और बुनाई से पहले करघे पर डिजाइन बनाने के लिए ताने को रंगकर बांध दिया जाता है। डिजाइन प्रक्रिया देश की किसी भी अन्य इक्कत साड़ियों से भिन्न है। डिजाइन आम तौर पर पक्षी, रुद्राक्ष मोती, जानवर, पासा, मंदिर टावर, ज्यामितीय डिजाइन और शिखर होते हैं। इस साड़ी के रेशमी कपड़े कटक जिले में मौजूद नुआपटना में बनाए जाते हैं और इक्कत धागों से बुने जाते हैं। इन साड़ियों का उपयोग हर दिन जगन्नाथ मंदिर में मूर्तियों को सजाने के लिए भी किया जाता है। विशेष रूप से पश्चिमी ओडिशा के भुल्लों द्वारा बुनी गई इक्कत की साड़ियां, कपड़े और पैटर्न के मामले में पूर्वी ओडिशा की तुलना में बेहतर माना जाता है।



कोटपाड़ साड़ी:- कोटपाड़ साड़ी की उत्पत्ति कोरापुट जिले से हुई है, जहां कोटपाड़ के आदिवासी बुनकरो द्वारा इस साड़ी को बुना जाता है और सब्जी के रंग का उपयोग किया जाता है। ये पट्टा, आँचल और ठोस बॉर्डर वाली सूती साड़ियां हैं, जो सभी जैविक रूप से रंगी हुई हैं। अन्य सामग्रियों में सूती व रेशम के पोशाक हथकरघा स्टोल, विशिष्ट रूपांकनों वाला दुपट्टा और कई सामग्री शामिल हैं।



इस साड़ी को बनाने में काफी समय लगता है लेकिन यह मेहनत के लायक है। प्राकृतिक वनस्पति डाई का निर्माण इस क्षेत्र में उगने वाले औल पेड़ से किया जाता है।

खंडुआ साड़ी:- खंडुआ साड़ी कटक में निर्मित होती है और इसे "ओडिशा का गौरव" कहा जाता है। यह हाथ से बुनी हुई क्लासिक साड़ी का एक उदाहरण है, जहाँ पारंपरिक लकड़ी के करघे का उपयोग शुद्ध सूती धागे से इन विशेष रूप से कलात्मक और उत्तम टुकड़ों को बुनने के लिए किया जाता है।

खंडुआ साड़ी बहुत हल्की होती है, इसका वजन लगभग 300 ग्राम होता है। खंडुआ रेशम की साड़ी अपनी सुंदरता के कारण विशेष रूप से महिलाओं द्वारा शादियों में पहनी जाती है। भगवान जगन्नाथ को एक विशेष प्रकार की खंडुआ साड़ी भी पहनाई जाती है। यह साड़ी पारंपरिक और

साड़ी पोशाक
साड़ी एक
जाएगा। चाहे
उत्सव, साड़ी
साड़ी प्रयोजन
सुंदरता का कोई मुकाबला नहीं है।



आधुनिक कला का एक अनूठा मिश्रण है, जो इसे आधुनिक के लिए बिल्कुल उपयुक्त बनाती है।

पारंपरिक फैशन कपड़ा है जो कभी भी स्टाइल से बाहर नहीं वह आपकी शादी का दिन हो या कोई अन्य अवसर या कोई आपकी सुंदरता में चार चाँद लगा देती है। कई आधुनिक अब उपलब्ध हैं, लेकिन पारंपरिक साड़ी द्वारा प्रदान की गई



देवमाली पर्वत (ओडिशा का उच्चतम शिखर)

श्रीमती रीटा अग्रवाल

पत्नी- श्री गिरराज शरण अग्रवाल

हिंदी अधिकारी



ओडिशा, पूर्वी भारत में स्थित राज्य, जिसे 1 अप्रैल 1936 को राज्य का दर्जा मिला। क्षेत्रफल के हिसाब से यह भारत का 8वाँ और जनसंख्या के हिसाब से 11वाँ सबसे बड़ा राज्य है। इस क्षेत्र को उत्कल, कलिंग के नाम से भी जाना जाता है और भारत के राष्ट्रगान में भी इसका उल्लेख आता है।

ओडिशा राज्य 'पुरी' स्थित श्री जगन्नाथ स्वामी मंदिर के लिए तो विश्वविख्यात है ही, साथ ही यह अपनी सांस्कृतिक धरोहर, पर्वों, उत्सवों, त्योहारों, मेलों, शिल्प-कला और प्राकृतिक सुंदरता एवं हरियाली के लिए भी देश-विदेश में अपनी एक अलग पहचान रखता है। ओडिशा राज्य का 30 प्रतिशत से अधिक भाग वनों से ढका हुआ है। यह भारत का चौथा सबसे अधिक वन क्षेत्र वाला राज्य है।

ओडिशा राज्य अपने पहाड़ी पर्यटन क्षेत्रों (हिल स्टेशन) के लिए भी जाना जाता है। यहाँ 15 से ज्यादा हिल स्टेशन हैं जिनमें से दारिंगबाड़ी, महेंद्रगिरी, तप्तपानी, टेकनाल, ओलासुनी हिल्स, देउली हिल्स, कुछ प्रसिद्ध हिल स्टेशन हैं।



इस लेख में मैं देवमाली विषय में जानकारी साझा करूंगी ओडिशा राज्य में स्थित एक पर्यटन क्षेत्र (हिल स्टेशन) तथा एक पहाड़ी चोटी है जो लगभग 1,672 मीटर (5,485 फिट) की ऊँचाई पर स्थित है। यह ओडिशा राज्य का उच्चतम शिखर है।

जिनमें से दारिंगबाड़ी, डुमरीपट हिल्स, देवमाली पर्वत जैसे

पर्वत ओडिशा के । देवमाली पर्वत बहुत ही सुंदर पहाड़ी



देवमाली, कोरापुट जिले में कोटिया पंचायत डिवीजन के बरबंदा गाँव के पास स्थित है, जो कोरापुट जिला मुख्यालय से सेमिलिगुडा होते हुए लगभग 70 किमी की दूरी पर स्थित है। यह पर्वत श्रृंखला गहरे हरे जंगल से घिरी हुई है तथा शिखर वनस्पतियों और जीवों से समृद्ध पहाड़ी क्षेत्र है। यह स्थान बॉक्साइट, चूना पत्थर, कीमती रत्न एवं खनिज संसाधनों से समृद्ध है। देवमाली झरनों और गहरी घाटियों से युक्त है और यहाँ कंध, परजा, भूमिया, माली और भोटिया जैसी जनजातियाँ निवास करती हैं।



देवमाली हिल्स के निकटतम रेलवे स्टेशन कोरापुट एवं निकटतम एयरपोर्ट विशाखापत्तनम है। कोरापुट से यहाँ सड़क मार्ग से आसानी से पहुँचा जा सकता है।

यह ओडिशा राज्य का बहुत ही जाना- माना पर्यटक स्थान होने के साथ-साथ पर्यटकों के आनंद के लिए हैंग ग्लाइडिंग, पर्वतारोहण और ट्रेकिंग जैसे एडवेंचर - स्पोर्ट्स को पसंद करने वाले खेल प्रेमियों के लिए भी एक कौतुहल का विषय है। हाल के दिनों में ओडिशा पर्यटन विभाग, ने पर्यटकों के बीच इस चोटी को एक प्रसिद्ध पर्यटन स्थल के रूप में लोकप्रिय बनाने के लिए कई कदम उठाए हैं, जिसमें टार सड़कों, हिल टॉप सुविधा केंद्र, पहाड़ी की चोटी पर स्वच्छ एवं फ्री पीने के पानी की व्यवस्था एवं इस स्थान की खूबसूरती मनोरम और मनोरम दृश्यों को निहारने के लिए वाच- टॉवर का निर्माण आदि शामिल है।

देवमाली हिल स्टेशन में पर्यटकों को पहाड़ी की चोटी की ओर बढ़ते समय रास्ते में कई झरने, नदी-नाले एवं गहरी घाटियाँ आदि मन को लुभाने वाले दृश्य दिखाई देते हैं। ऐसा प्रतीत होता है मानो ये सब दृश्य पर्यटकों का स्वागत कर रहे हों और उनसे कह रहे हों कि “आइये प्रकृति की सुंदर गोद में आपका स्वागत है।” ये दृश्य पर्यटकों को मंत्रमुग्ध कर देते हैं और बिना थके लगातार





उनको ओडिशा की सबसे ऊँची चोटी की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित करते हुए प्रतीत होते हैं। फिर एक लम्बी यात्रा के पश्चात पर्यटकों की आँखों के सामने देवमाली की चोटी का विहंगम दृश्य दिखाई देता है जो गहरी हरे रंग की वनस्पतियों से आच्छादित और गर्व से खड़ी दिखाई देती है। ऐसा लगता है कि ये चोटी पूरी पर्वत श्रृंखला के पर्वतों का नेतृत्व कर रही हो।

देवमाली पर्वत चोटी उसके आस-पास स्थित अन्य पर्वत चोटियों के विपरीत समतल, कोमल और सपाट है। इस यात्रा के दौरान कई बार रुक-रुक कर प्रकृति की सुंदरता को निहारने का मन करता है। इस यात्रा में पर्यटक जब क्षितिज को दूर तक देखते हैं तो क्षितिज का दृश्य एक श्रृंखला में दिखाई देता है जो मन को आनंद और प्रसन्नता से भर देता है।

पर्यटक, देवमाली में सूर्योदय एवं सूर्यास्त का आनंद लेने के लिए आराम से देर तक बैठते हैं। देवमाली हिल, ओडिशा की यह यात्रा पर्वत श्रृंखलाओं, गहरे वनों और सूर्योदय एवं सूर्यास्त की यादों की ऐसी अमिट छाप छोड़ती है जो कई महीनों तक दिल और दिमाग को तरोताजा रखती है।

कहाँ पर रुकें :- देवमाली में कोई होटल उपलब्ध नहीं है पर्यटकों को यहाँ रुकने के लिए इस स्थान से लगभग 70 कि.मी पहले सेमिलिगुडा में रुकना पड़ता है। यदि कोई पर्यटक दल कैप (टेंट) लगाकर रुकना चाहे तो उन्हें स्थानीय प्रशासन से आवश्यक परमिट की आवश्यकता होती है।

देवमाली हिल, ओडिशा यात्रा के दौरान ध्यान में रखी जाने योग्य बातें :-

- देवमाली पर्वत शिखर, बीच में है जहाँ कई गाँवों में निवास करती हैं।
- किसी भी आपतकालीन देवमाली में कोई सुविधा
- एक ही तरफ से घाट रात में जंगली जानवरों के कारण रात में यह जोखिम भरा हो सकता है।



आदिवासी भूमि के जनजातियाँ पहाड़ी

स्थिति के लिए उपलब्ध नहीं है।

वाली सड़क है और





- देवमाली में ओडिशा के अन्य स्थानों यहाँ तक की इसके पास कोरापुट शहर की तुलना में तापमान काफी कम रहता है अतः मौसम के अनुसार अपनी व्यवस्था रखना बेहतर होगा।

संक्षेप में, ओडिशा में देवमाली एक ऐसा स्थान है जो एडवेंचर स्पोर्ट्स को पसंद करने वाले व्यक्तियों के लिए श्रेष्ठ स्थान, फोटोग्राफी के शौकीन लोगो के लिए स्वर्ग और प्रकृति प्रेमियों के लिए परमानन्द का स्थान है।



भीतरकनिका मेंगोव : राष्ट्रीय उद्यान, ओडिशा की यात्रा

श्रीमती तुलसी वर्मा
पत्नी- श्री राहुल कुमार वर्मा,
कनिष्ठ अनुवादक



बहुत दिनों से कोई अच्छी जगह घूमने का मन था। आगे लंबा वीकेंड था। 29 मार्च को गुड फ्राइडे की छुट्टी थी। मैंने मेरे पति से कहा कि कहीं घूमने चलते हैं तो उन्होंने कहा कि ठीक है अपने किसी दोस्त से पता करता हूँ। दोस्त ने बताया कि भुवनेश्वर से लगभग 180 किलोमीटर की दूरी पर भीतरकनिका: राष्ट्रीय उद्यान नाम का एक बहुत ही सुन्दर स्थान है।

मेरे पति के मित्र ने भी इस स्थान का केवल नाम ही सुना था लेकिन जाना कभी नहीं हुआ था तो उन्होंने भी अपनी पत्नी के साथ हमारे साथ इस यात्रा में शामिल होने की इच्छा जाहिर की। मेरे पति तो खुश हो गए क्योंकि यात्रा में जितने अधिक लोग होते हैं उतना ही ज्यादा आनंद आता है। मैं भी बहुत खुश थी।

अगले दिन सुबह 7 बजे निकलने का प्रोग्राम बना। मेरे पति ने मुझसे कहा कि सुबह कुछ खाना हम लोग बनाकर लेकर चलेंगे और कुछ खाना वो लोग बनाकर लेकर चलेंगे तो सुबह जल्दी उठना पड़ेगा यह कहकर मेरे पति बाल्टी और डब्बा लेकर मिस ब्लेकी (हमारी कार का नाम) को चमकाने चले गए।

बहुत सोचने के बाद प्लान बना कि आलू के परांठे और घर का बना आम का आचार लेकर चलेंगे। रात को ही आलू उबालकर फ्रिज में रख दिए। सुबह 5 बजे उठे और आलू के गर्म परांठे और आचार पैक किया साथ ही कुछ बिस्किट और नमकीन, ठण्डे पानी की बोतल ली तब तक इनके मित्र भी अपने परिवार के साथ आ गए थे। वो लोग भी खाने के लिए पूरी और आलू मटर की सूखी सब्जी बनाकर लाए थे। मैं, मेरी बेटी और मेरी सहेली पीछे बैठे और इनके मित्र आगे इनके साथ बैठ गए ताकि गूगल मैप की मदद से गंतव्य तक पहुँचा जा सके।



भीतरकनिका मेंगोव व राष्ट्रीय उद्यान भारत के ओडिशा राज्य के केंद्रपाड़ा ज़िले में स्थित एक मेंगोव युक्त राष्ट्रीय उद्यान है। यह 145 वर्ग किमी (56 वर्ग मील) में फैला हुआ है। 19 अगस्त 2002 को इसे रामसर स्थल का दर्जा मिल गया। ओडिशा में चिल्का झील के बाद यह दूसरा रामसर स्थल है। यह राष्ट्रीय उद्यान भीतरकनिका वन्यजीव अभ्यारण्य (Bhitarkanika wild life Sanctuary) से घिरा हुआ है जो 672 वर्ग किमी के क्षेत्रफल पर विस्तारित है। ब्राह्मणी, बैतरणी, धामरा आदि नदियाँ राष्ट्रीय उद्यान और अभ्यारण्य को जल पहुँचाती हैं। यहाँ मेंगोव की कई प्रजातियाँ हैं और यहाँ का भीतरकनिका मेंगोव परिक्षेत्र भारत का दूसरा सबसे बड़ा मेंगोव परिक्षेत्र है। राष्ट्रीय उद्यान में खारे पानी में रहने वाले मगरमच्छ, सफेद मगरमच्छ, भारतीय अजगर, नाग, जंगली सूअर, बंदरों, चीतल, बानकर, कोबरा, पानी में रहने वाली छिपकली कई प्रकार के केंकड़े, काला बाज़ (आइबिस पक्षी), डार्टर (पनकौआ) आदि इस उद्यान की शोभा हैं। गाहिरमथा और अन्य पास के समुद्र तटों पर समुद्री-कछुए पाए जाते हैं। भारत में सबसे ज्यादा समुद्री मगरमच्छों की आबादी भीतरकनिका में है और यहाँ 10 प्रतिशत वयस्क मगरमच्छों की लंबाई 6 मीटर की है जो कि दुनिया भर में अनूठा है। यहाँ लगभग 1000 से अधिक समुद्री मगरमच्छ रहते हैं।

किंगफिशर की आठ किस्मों सहित पक्षियों की 200 से अधिक प्रजातियाँ यहाँ पाई जाती हैं। जलकौवा, बानकर, एग्रेट्स, जैसे पक्षियों को अक्सर उद्यान में देखा गया है।

हम लगभग 11 बजे भीतरकनिका के बोट स्टैंड पर पहुँच गए और बोट चालक से बात करने पर पता चला कि बोट का किराया रूपए 3000/- है। किस्मत से हमें दो लोग और मिल गए जिन्होंने हमें किराया साझा करने का प्रस्ताव दिया। हम तैयार हो गए और बाकी का सामान गाड़ी में छोड़कर मेरे पति ने गाड़ी को पार्किंग में एक छायादार स्थान पर खड़ा कर दिया। कुछ खाने का सामान और पानी लेकर हम सब बोट पर सवार हो गए। हमारा नाविक हमारा गाइड भी था।

कुछ दूर चलने पर ही नाविक ने आवाज दी कि सामने देखिये एक मगरमच्छ है हमने उत्सुकता के साथ देखा तो मगरमच्छ दिखाई दिया। हम सबको बहुत भूख लगी थी तो हमने अपना खाना निकाला और खाने लगे। अभी खाना खतम भी नहीं हुआ था कि नाव-चालक बोला की जल्दी से सब नाव के ऊपर की तरफ आइये नहीं तो नाव की खिड़की से बाएँ तरफ देखिये हमने बाहर देखा कि एक बहुत ही विशाल मगरमच्छ दिखाई दिया जिसका रंग काला था। नाव





का चालक बोला कि ये कालिया मगरमच्छ है जो कि लगभग 23 फीट लंबा है। यह भारत का सबसे बड़ा मगरमच्छ है इसकी आयु लगभग 98 वर्ष की है और आप लोग बहुत लकी है क्योंकि ये बहुत कम दिखाई देता है। इस प्रकार हमने भिन्न-भिन्न प्रजातियों, आकारों, रंगों के मगरमच्छ देखे। मगरमच्छ के आलावा हमने, कई प्रकार के अन्य जीव जैसे, हिरण, बारहसिंगा, जंगली सूअर आदि एवं विभिन्न प्रकार के पक्षी देखे जिनमें अलग-अलग रंगों के किंगफिशर पक्षी बहुत ही आकर्षक थे। हम कभी नाव के अंदर बैठते थे तो कभी नाव के ऊपर आ जाते थे।

लगभग 2 घंटे की बोट यात्रा के बाद हम भीतरकनिका राष्ट्रीय उद्यान के तट पर पहुँचे नाव- चालक भी गाइड के रूप में हमारे साथ था। चालक ने एक रिफ्रेशमेंट स्टॉल की तरफ हमारा ध्यान आकर्षित करते हुए बोला की आगे की यात्रा हम पैदल करेंगे। कुछ जलपान करना हो तो यहाँ कर सकते हैं, नहीं तो अभी हम आगे रेपटाइल-स्केलटन म्यूजियम चलेंगे फिर हमको म्यूजियम के रास्ते में हमारे गाइड ने बहुत सारे अलग-अलग प्रकार के हिरन दिखाए, कुछ बाड़ा-बंदी किये हुए मगरमच्छ भी दिखाए जिसमें गौरी नाम की सफेद मगरमच्छ सबके आकर्षण का केंद्र थी। नेशनल पार्क में बन्दर बहुत थे इसलिए हमारे गाइड से हमसे खाने को छुपाकर चलने को कहा। फिर लगभग 20 मिनट बाद हम रेपटाइल-स्केलटन म्यूजियम पहुँचे जहाँ पर बहुत विशाल मगरमच्छों, डोलफिन, हिरणों के कंकाल रखे हुए थे, किसी प्रकार के केमिकल में साँप, अजगर, मगरमच्छ के बच्चे, मगरमच्छ के अंडे, और अन्य मृत प्राणी रखे हुए थे जिन्हें देखने में ऐसा लग रहा था कि मानो सब जीवित हों। वहाँ फोटो खींचना भी निषेध नहीं था तो हमने वहाँ कुछ फोटोग्राफी की और वहाँ से निकल लिए।

उसके बाद हमारे गाइड ने कहा कि अब हम मगरमच्छों के प्रजनन केंद्र की यात्रा करेंगे। हम सब ये सुनकर उत्सुकता से भर गए 5 मिनट चलते ही हम मगरमच्छों के प्रजनन केंद्र पहुँच गए जहाँ मगरमच्छ के अंडे तथा 6 महीने से लेकर 2 वर्ष तक के मगरमच्छ अलग अलग रखे गए थे एवं बोर्ड पर उनके बारे में आवश्यक जानकारी एवं सूचना दी गई थी। ये हमारे लिए बहुत ही अनोखा और आकर्षक था।

हमारे गाइड ने हमसे कहा कि अब हम जंगल की ट्रेकिंग करेंगे जिसमें सभी को सावधान होकर मेरे पीछे चलना है। इस ट्रेकिंग का रास्ता बहुत ही खराब था और जगह जगह पर मगरमच्छ से सावधान के बोर्ड लगे थे। जिनसे थोड़ा डर भी लग रहा था मैंने अपने पति से कहा तो उन्होंने



कहा कि कोई डरने की बात नहीं बस चलते वक्त थोड़ा सावधानी से चलो रास्ता बहुत खराब है पैर में मोच आ सकती है। रास्ते के साइड में दलदली भूमि थी। हमारे गाइड ने हमें कुछ लाल रंग के कैंकड़े भी दिखाये। लगभग 20 मिनट के बाद हमारी ये ट्रेकिंग पूरी हुई। हम वापस आकर नाव में बैठे और अपने गंतव्य पर आ गए। उस दिन हम रास्ते में कटक- संभलपुर हाईवे पर स्थित एक राजस्थानी ढाबे पर खाना खाकर लगभग 10 बजे अपने घर भुनेश्वर पहुँचे। यात्रा बहुत ही रोचक, सुखद और यादगार रही। यदि मुझे भविष्य में कभी पुनः मौका तो मैं अवश्य ही भीतरकनिका की यात्रा करूंगी।







गोटीपुआ: ओडिशा का एक नृत्यनाट्य

श्रीमती स्वर्ण स्वरूपा पात्र
पत्नी- श्री अमित कुमार प्रधान,
वरिष्ठ लेखापरीक्षक



गोटीपुआ एक प्रकार का नृत्यनाट्य है जिसका उद्भव जगन्नाथ मंदिर में पंद्रहवीं शताब्दी में माना जाता है। इस लोकनाट्य पर जयदेव के 'गीतगोविंद' का स्पष्ट प्रभाव दिखाई पड़ता है। कालान्तर में मुस्लिम आक्रांताओं के आक्रमण से रक्षार्थ मंदिर की प्रतिमाओं को चूने या खड़िया से आवृत कर दिया गया तथा वहाँ के उन सेवादारों के लिए मंदिर के बाहर अखाड़ों की स्थापना कर दी गई जो मंदिर में नर्तकों को प्रशिक्षण दिया करते थे। गोटीपुआ का दार्शनिक पक्ष है कृष्ण ही एकमात्र पुरुष हैं और शेष सभी भक्तजन गोपियां हैं। रामानन्द राय एक कट्टर वैष्णव भक्त थे और वे सखी संप्रदाय के पक्के अनुयायी थे। उन्होंने ही जगन्नाथ मंदिर में इस परंपरा को आरंभ किया कि स्त्रियों के बजाय मंदिर में नर्तक ही स्त्रीवेश में भगवान के सम्मुख मंडप में नृत्य करेंगे। इस प्रकार से गोटीपुआ नृत्यनाट्य का उद्भव हुआ।

गोटीपुआ को एक स्वतंत्र नृत्यनाट्य के रूप में भोई शासक रामचन्द्र देव के समक्ष सन् 1600 के आसपास महत्व मिला। रामचन्द्र देव ने मंदिर की पूजा एवं अनुष्ठानिक परंपराओं को बचाए रखने की दृष्टि से मंदिर के बाहर इस कार्य हेतु सालमार्गों का निर्माण करवाया और उनमें अखाड़ों की स्थापना की। इन अखाड़ों में ही अन्य परंपराओं के साथ-साथ गोटीपुआ नृत्य का भी प्रशिक्षण दिया जाता था। गोटीपुआ सीखने वाले बालकों को अखाड़ा विला कहा जाता था। ये एक प्रकार की व्यायाम शालाएं थीं जिनमें प्रशिक्षण देने का कार्य नृत्य पारंगत गुरु किया करते थे।

नृत्य अध्येताओं के मतानुसार गोटीपुआ का उद्भव ओडिसा नृत्य से हुआ है क्योंकि मंदिर के सेवादारों ने ही अखाड़ों में प्रशिक्षण आरंभ किया था जबकि कुछ अन्य अध्येता यह मानते हैं कि गोटीपुआ से ओडिसी का उद्भव हुआ है। प्रसिद्ध ओडिसी गुरु एवं नर्तक आरंभ में गोटीपुआ नर्तक थे। उन्होंने मंदिर की बाह्य भीतियों पर लगी हुई अप्सराओं की प्रतिमाओं से प्रभावित होकर



ओडिसी नृत्य प्रारंभ किया। इन प्रतिमाओं की भावभंगिमाओं एवं आंगिक चेष्टाओं से प्रभावित होकर उन्हें ओडिसी नृत्य में ग्रहण किया गया था। गोटीपुआ नर्तक एवं प्रशिक्षक होने के कारण उनका बदन इतना लचीला था कि वे सहज ही उन प्रतिमाओं को ओडिसी में साकार कर सकें।

प्रशिक्षण: बालकों की सात वर्ष की उम्र से ही गोटीपुआ नृत्यनाट्य का प्रशिक्षण आरंभ हो जाता है। सामान्यतः अठारह वर्ष के पश्चात नर्तक गोटीपुआ प्रदर्शन में भाग नहीं लेते और वे प्रशिक्षक बन जाते हैं। ओडिसी नृत्य का उद्भव भी गोटीपुआ नृत्य से माना जाता है। अठारह वर्ष के होने पर वे नर्तक ओडिसी नृत्य में सक्रिय हो जाते हैं। प्रशिक्षण में प्रशिक्षणार्थियों को कठिन अभ्यास से गुजरना पड़ता है ताकि उनका बदन लचीला बन सके। प्रशिक्षण में नृत्य के साथ-साथ गायन तथा संगीत भी सीखना आवश्यक है क्योंकि ये गोटीपुआ के आवश्यक अंग हैं। गोटीपुआ के प्रदर्शन के समय नर्तकों को संगीत, धुन पर गायन भी करना पड़ता है।

गोटीपुआ कलाकार तीज-त्यौहारों पर एवं मेलों में अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं, साथ ही गाँवों में भी घूम-घूम कर प्रदर्शन करते हैं। परंपरागत रूप से गोटीपुआ का आयोजन पुरी में चन्दन जात्रा और झूलन जात्रा के अवसर पर किया जाता है। जिस समय भगवान जगन्नाथ की यात्रा चन्दन पोखरी पर जाती है उस अवसर पर गोटीपुआ का आयोजन किया जाता है। यह कार्यक्रम 21 दिनों तक चलता है जिसमें प्रत्येक दिन पृथक-पृथक गोटीपुआ दल को अवसर मिलता है।

वेशभूषा एवं अंगराग: सत्रहवीं शताब्दी के उड़िया ताड़पत्र पंजी “अभिनय चन्द्रिका” में गोटीपुआ की वेशभूषा (अंगराज) का वर्णन किया गया है। इसके लेखक महेश्वर महापात्र थे। यह पंजी, वर्तमान, ओडिसी गुरु कविचन्द्र कालीचरण पटनायक के पास है। शृंगराज में चेहरे पर हल्के पीले रंग के चूर्ण का लेप लिया जाता है। नेत्रों को बड़ा एवं प्रभावशील बनाने के लिए नेत्र और भौं पर काजल का उपयोग किया जाता है। काजल इस प्रकार से लगाया जाता है कि नेत्र बड़े और प्रभावशाली लगे। मस्तक एवं चेहरे की बेलबूटों की आकृतियों से मधुमक्खी का प्रतीक चित्र बनाया जाता है। केश श्रृंगार हेतु फूलों की वेणी का उपयोग होता है।



अभिनय चन्द्रिका में श्रृंगार हेतु प्रयोग में लाए जाने वाले आभूषणों का उल्लेख किया गया है जैसे चन्द्र, अल्का, केतक केश सज्जा में, कर्ण आभूषण कूपा, अनेक प्रकार के सर कम्हार, बांहों के लिए ताड़ता और कलेई हेतु करकन कंचन तथा कटि हेतु बेगायुतिभा या रजत निर्मित करधन प्रयुक्त होते हैं। वस्त्रों में रेशम की पट्ट साड़ी जो गहरे चमकदार रंग की होती है उसे पहनते हैं। इनमें लाल रंग की पसन्द किया जाता है। चोली कुरती भी चमकीले रंग के हैं जिस पर कृत्रिम नग जड़े पर दुपट्टे के सदृश्य एक है। वेशभूषा में परंपरागत पूरा पालन किया जाता है। एक युवती की भाँति किया आरंभ में गुरु, गोटीपुआ के कर उसे आशीर्वाद प्रदान करते हैं।



साड़ी को सर्वाधिक (ब्लाऊज) तथा रेशम का बना होती होते हैं। कटि-प्रदेश रेशमी वस्त्र बंधता देवदासी परंपरा का गोटीपुआ का श्रृंगार जाता है। नृत्य के पैरों में घुंघरू बांध

प्रदर्शन: गोटीपुआ का प्रदर्शन भगवान जगन्नाथ की आराधना के साथ आरंभ होता है। नर्तक आराधना के पश्चात अपने गुरु का चरण स्पर्श कर उनका आशीर्वाद प्राप्त करता है। गुरु पखावज बजाते हैं। इसके अधिकांश प्रसंग या तो जयदेव कृत गीतगोविंद पर आधारित हैं या पुराण कथाओं पर। नृत्य प्रस्तुत करते समय नर्तक स्वयं भी गायन करता है। गोटीपुआ के आयोजन सामान्य रूप से मंदिरों के प्रांगण में आयोजित होते हैं। चन्दन पोखरी का आयोजन नावों पर किया जाता है। इस प्रदर्शन हेतु दो नावों को जोड़ कर मंच का निर्माण किया जाता है। झूलन यात्रा का आयोजन मंदिरों के झूलन मंडप या मुक्तिमंडप में आयोजित होता है।

अनेक ग्रामों एवं कस्बों में गोटीपुआ यहां के भूतपूर्व राजाओं एवं जमींदारों के निवास के प्रांगण में आयोजित होते हैं। पूर्व में भी गोटीपुआ के दलों को मठों एवं जमींदारों का संरक्षण प्राप्त होता था। कुछ जमींदारों ने तो मनोरंजन हेतु अपने स्वयं के भी गोटीपुआ अखाड़े स्थापित कर रखे थे जिनसे वे अपने परिवारजनों, मित्रों तथा अतिथियों का मनोरंजन करवाते थे। इधर बीस-पच्चीस वर्षों में इन नृत्यनाट्य में भी विकृतियां आने लगी हैं। दक्षिण के तेलुगु भाषी क्षेत्र के सखीनाच का प्रभाव गोटीपुआ पर स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ने लगा है। सखीनाच के नृत्य अत्यन्त



उत्तेजक एवं श्रृंगारिक होते हैं। बहुत से पुराने गुरु जो वर्तमान में ओडिसी नृत्य से जुड़े हुए हैं, वे इस नृत्य नाट्य को मूलस्वरूप को बचाने के प्रति सजग हैं। ओडिशा सरकार के सहयोग से कंटीलों नामक कस्बे में गोटीपुआ प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना की गई है। ओडिशा सांस्कृतिक रूप से एक समृद्ध प्रदेश है। आशा की जानी चाहिए कि नाट्य गुरुओं का यह प्रयास सफल होगा।



कुण्डेश्वर

श्रीमती संयुक्ता जड़िया,
कनिष्ठ अनुवादक



कुण्डेश्वर- मध्य प्रदेश के टीकमगढ़ जिले से दक्षिण की ओर 5 कि.मी. की दूरी पर बसा एक छोटा सा गाँव है जो प्रसिद्ध है कुण्डेश्वर महादेव मंदिर के लिए। दर्शनार्थी दूर-दूर से यहाँ महादेव के दर्शन के लिए आते हैं। यह मंदिर जमझार नदी के किनारे पर स्थित है और नदी के पीछे फैले जंगल इसकी सुंदरता को और भी अधिक मनमोहक बना देते हैं।

इसका नाम कुण्डेश्वर पड़ने के पीछे दो मान्यताएं प्रचलित हैं। पहली, बड़े बुजुर्गों के अनुसार कुछ लोगों का मानना है कि जमझार नदी, मंदिर के पीछे जिस कुण्ड में गिरती है शिवलिंग की उत्पत्ति भी वहीं से हुई है और दूसरी ओर कुछ लोगों की मान्यता है कि आज जिस स्थान पर मंदिर स्थित है वहाँ पहले एक घर हुआ करता था उस घर में रहने वाली महिला ने धान आदि कूटने के लिए जमीन के अंदर कूणा (कुण्ड) बनाया हुआ था वहीं से ये शिवलिंग प्रकट हुआ है अर्थात् शिवलिंग स्वयंभू हैं। शिवलिंग की ऊंचाई लगभग 5 फुट है। ऐसी भी मान्यता है कि शिवलिंग प्रतिवर्ष चावल जितना बढ़ता है। शिवलिंग की उत्पत्ति की मान्यताएं भले ही भिन्न-भिन्न हों परंतु इससे यहाँ आने वाले श्रद्धालुओं की श्रद्धा और आस्था पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

आज से बीस साल पहले यहाँ पर एक छोटा सा मंदिर हुआ करता था। जहाँ पहले एक मंदिर, मंदिर के पुजारी आदि के लिए कुछ कमरे, कुण्ड तक जाने एवं नदी में स्नान करने के लिए कुछ सीढ़ियां भर थीं परंतु आज यहाँ पर एक बड़ा एवं सुंदर प्रांगण, 24x7 भजन-कीर्तन के लिए हॉल, यहाँ पर आने वाले श्रद्धालुओं के लिए पीने के पानी, भंडारा एवं बैठने की सुविधा, किसी भी प्रकार का कार्यक्रम, पूजापाठ, यज्ञ आदि कराने के लिए शेड्डेड चबूतरे, प्रसाद खरीदने हेतु मंदिर के प्रांगण के बाहर बनी सुव्यवस्थित दुकानें, पार्किंग की सुविधा इत्यादि मंदिर समिति की ओर से उपलब्ध हैं।

यहाँ पर मकर-संक्रांति और सावन के महीने में एक बड़े मेले, भजन-कीर्तन, अभिषेक इत्यादि का भी आयोजन किया जाता है। सावन के पूरे माह तो यहाँ श्रद्धालुओं की भीड़ देखने को मिलती ही है परंतु श्रावण-सोमवार को भक्तों का तांता और भी अधिक बढ़ जाता है। मंदिर से 2 कि.मी. पहले ही वाहनों का आवागमन बंद हो जाता है, आगे का रास्ता पैदल ही तय करना होता है। श्रावणमास में आस-पास के गाँवों से काँवड़िये भी यहाँ जल चढ़ाने आते हैं। विशेषकर श्रावण-सोमवार के समय प्रत्येक सोमवार को महादेव का भव्य एवं आकर्षक श्रृंगार किया जाता है जिसमें भिन्न-भिन्न रूपों से अलंकृत कर महादेव को एक अलग एवं अलौकिक रूप दिया जाता है और ये सभी आकृतियाँ भांग को पीसकर उसके लेप से उकेरी जाती हैं। इस मंदिर को बुंदेलखण्ड का काशी भी कहा जाता है।

दिन-प्रतिदिन इस मंदिर का प्रचार-प्रसार और महिमा इतनी बढ़ती जा रही है कि कुण्डेश्वर धाम को ज्योतिर्लिंग में शामिल जोर पकड़ रही है। इस संबंध में पर मंदिर प्रशासन द्वारा हस्ताक्षर प्रशासन को ज्ञापन सौंपने जैसे चलाए जाते हैं।



प्रत्येक महाशिवरात्रि पर यहाँ पार्वती विवाह का आयोजन किया जाता है जिस दौरान पहले दिन हल्दी और मण्डप की रस्म निभायी जाती है और शिवरात्रि के दिन शिव-पार्वती विवाह होता है जिसमें बड़े ही धूम-धाम से शिव जी की बारात निकाली जाती है और 108 प्रकार के विभिन्न व्यंजनों से प्रसाद लगाया जाता है। इस दौरान कई प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी किया जाता है जिसमें स्थानीय एवं बाहरी कलाकार सांस्कृतिक कार्यक्रम में अपनी प्रस्तुति देते हैं। भजन संध्या का भी आयोजन समय-समय पर किया जाता है। इसके साथ ही प्रत्येक एक या दो वर्ष के अंतराल में पार्थिव शिवलिंग निर्माण, भागवत कथा जैसे आयोजन भी किए जाते हैं।

मंदिर का प्रांगण एवं समीप का वातावरण इसे पिकनिक स्पॉट के लिए भी सुगम बनाता है। कई सालों से नव वर्ष (1 जनवरी) के समय पिकनिक मनाने और परिवार व दोस्तों के साथ



समय बिताने के लिए यह टीकमगढ़ वासियों एवं आस-पास के लोगों के लिए पहली पसंद रही है क्योंकि यहाँ पर जमझार नदी से एक छोटा सा सुंदर झरना बनता है जिसका पानी कुण्ड में गिरता है यह दृश्य व स्थान काफी सुंदर है साथ ही नदी के पीछे जंगल है जहाँ पर कुछ दूरी तक जाया जा सकता है और परिवार व दोस्तों के साथ समय बिताया जा सकता है।



अच्छी ऑडिट रिपोर्ट बनाने की राह में

श्री गुप्त प्रसाद मिश्र
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
महालेखाकार (लेखापरीक्षा II) का कार्यालय
ओडिशा, भुवनेश्वर



लोकतांत्रिक व्यवस्था में व्यवस्थापिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका तीन मुख्य स्तंभ माने जाते हैं। जहाँ तक सभी योजनाओं के वास्तविक क्रियान्वयन और निष्पादन की बात है, जिसका व्यय केंद्र और राज्य की समेकित निधि (Consolidated fund) से होता है। जहाँ कार्यपालिका, व्यवस्थापिका के अनुमोदन उपरांत व्यय करती है। चूंकि ऑडिट इस निधि के उपयोग के आर्थिक, प्रभावशीलता और दक्षता के पहलू की जाँच करता है, ऑडिट की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है और समय-समय पर कई चुनौतियों का सामना भी करना पड़ता है।

लेखापरीक्षक सार्वजनिक क्षेत्र की परियोजनाओं के क्रियान्वयन और निष्पादन में सभी प्रक्रियात्मक खामियों और कमियों की तह तक जाने का जोखिम उठाते हैं। इसलिए जब एक ऑडिट राय बनती है तो यह बहुत स्वाभाविक है कि नौकरशाही द्वारा इस निष्कर्ष पर असहमति होगी। अक्सर यह आरोप लगाया जाता है कि ऑडिट तकनीकी रूप से कोई राय बनाने की योग्यता नहीं रखता है। इसलिए ऑडिट निष्कर्षों के समर्थन में दस्तावेज़ीकरण और साक्ष्य का महत्व, ऑडिट राय बनाने की कुंजी है। यह रिपोर्टिंग के विभिन्न चरणों में ऑडिट निष्कर्षों का बचाव करने में मदद करता है जब तक कि यह ऑडिट रिपोर्ट मुद्रित न हो जाए।

पिछले कुछ वर्षों में, सरकारी एजेंसियाँ, जिन पर सरकारी कार्यक्रमों/परियोजनाओं के क्रियान्वयन और निष्पादन की जिम्मेदारी है, अधिक परिपक्व हो गई हैं और आपत्ति किए गए कमजोर क्षेत्रों पर अधिक संतुष्ट हो गई हैं, जिनसे ऑडिट टिप्पणियों का खतरा रहता है। इसलिए केवल पारंपरिक विचारों पर भरोसा करने से विभाग की खामियों और कमजोरी की पूरी जानकारी



नहीं मिल सकती है। एक ऑडिटर को हाल की राष्ट्रीय और राज्य ऑडिट रिपोर्टों के ज्ञान के साथ-साथ आधुनिक संसाधनों और तकनीकों से अपडेट रहने की आवश्यकता है।

हाल के वर्षों में, ऑडिट रिपोर्टिंग में भारी बदलाव आया है। पारंपरिक रिपोर्ट शैलियों में श्रव्य-दृश्य (audio-visual) तकनीकों को पूरक बनाया गया है। इसे और अधिक पाठक अनुकूल बनाने के लिए कंप्यूटर और इंटरनेट सहायता प्राप्त दस्तावेज़ को शामिल किया जा रहा है। लेकिन अभी भी नई पहल करने और रिपोर्टिंग पैटर्न को और अधिक आकर्षक बनाने की गुंजाइश है।

हाल के दिनों में भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग में कई नई भर्तियां हुई हैं। ओडिशा कार्यालय में भी कई लेखापरीक्षक और सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी शामिल हुए हैं। नई नियुक्तियों को सर्वोत्तम संभव तरीके से प्रशिक्षित और सशक्त करने की आवश्यकता है ताकि वे असरदार कार्मिक के रूप में उभर सकें। इस संवैधानिक संस्था की विरासत का गौरवशाली अतीत 150 वर्षों से अधिक पुराना है और यह अनंत काल तक बना रहेगा। इसलिए, इन युवा सैनिकों को अपने वरिष्ठ अधिकारियों के साथ इस विरासत को नई ऊंचाइयों तक ले जाने के लिए आगे आना चाहिए। प्रतिबद्ध कार्य से हम ऐसे उच्च मानक स्थापित कर सकते हैं जो लेखा परीक्षकों की भावी पीढ़ी के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेंगे।



संघर्ष

श्री पी श्रीनिवास
सहायक पर्यवेक्षक
महालेखाकार (लेखापरीक्षा II) का कार्यालय
ओडिशा, भुवनेश्वर



एक दिन की बात है। भाषा, साहित्य और विचार तेजी से मार्ग में चले जा रहे थे। वे हिंदी में वार्तालाप करते हुए कार्यक्रम में शामिल होने जा रहे थे। वे तीनों अभिन्न मित्र थे। एक के बिना दूसरे का अस्तित्व संभव ना था। समाज की उन्नति में इनका योगदान अविस्मरणीय है। विचार को समाज में प्रकट होने का सुअवसर भाषा के कारण ही मिला। विचार के भाषा के साथ प्रकट होते ही साहित्य प्रगति करने लगता है। अतः तीनों को भिन्न रूप में देखना असंभव जान पड़ता था।

अचानक उनके वार्तालाप में बाधा आ गई। एक विदेशी जुबान की पुकार थी। कार्यक्रम में जल्दी पहुँचना था इसलिए उन्होंने ध्यान नहीं दिया और एक कारण यह भी था कि इस जुबान से वे कभी मिले नहीं थे। अतः वह जुबान उन्हें अजनबी लगी। वही जुबान फिर से सुनाई दी। इस बार उसकी आवाज कड़कती और गर्व से भरी थी। उसमें उसके विदेशी होने का दर्प पूर्णतया झलक रहा था। उन्होंने पीछे मुड़कर देखा तो पाया कि कीमती पोशाक आधुनिक श्रृंगार से सुसज्जित यह एक विदेशी जुबान थी। इन तीनों को वह अपने से कमतर समझ रही थी। ये तीनों भारतीय हैं और इनकी वेशभूषा और वार्तालाप में उसे भारतीयता का अनुभव हुआ। वे थोड़ी देर के लिए रुक गए और उनके चेहरे पर प्रश्न चिह्न था कि आखिर इसने पुकारा क्यों ?

उसने पूछा - आप तीनों इतनी जल्दी में कहाँ जा रहे हैं ?

भाषा ने उत्तर दिया - हम एक हिंदी सभा में जा रहे हैं।

विदेशी जुबान ने व्यंग्य में पूछा - हिंदी सभा ! यह तो एक निम्न श्रेणी की सभा जान पड़ती है, है ना ?





इस बार साहित्य ने कहा - साहित्य के रहते हुए कोई भी सभा निम्न श्रेणी की हो ही नहीं सकती। मैं तो अपने आप में एक विशाल सागर हूँ। जो भी इसमें गोता लगाएगा, वही इस अनमोल मोती को पाएगा।

विचार ने विनम्रता से कहा- अरी बहन ! एक बार इस सभा में शामिल तो हो जाइए फिर किसी निर्णय पर पहुँचना। वास्तव में कोई भी सभा उच्च या निम्न कोटि की नहीं होती। यह तो आपका पूर्वाग्रह है।

विदेशी जुबान ने घमंड भरे स्वर से रौब दिखाते हुए कहा - हमारी जब सभा होती है ना तो चमक-दमक आधुनिक यंत्रों से सुसज्जित विशाल प्रकोष्ठ होता है। देश-विदेशों से लोग सभा में आते हैं और प्रदर्शन देखकर दाँतों तले उंगली दबा लेते हैं।

भाषा ने प्यार से कहा - अच्छा है। एक बार हमारी सभा में आने का कष्ट करें। हमारी सभा की रौनक बढ़ जाएगी और आपकी गलतफहमी भी दूर हो जाएगी। विदेशी जुबान ने हामी भरी। वे चारों तेजी से सभा में पहुँचे। जैसे ही विचार ने कदम रखा, संचालक ने कार्यक्रम की शुरुआत की। संचालक की आज्ञा से विचार ने भाषा को मंच पर आमंत्रित किया। भाषा के मंच पर पग धरते ही संचालक ने भाषा से याचना की कि वह अपना परिचय दें।

भाषा ने मधुर स्वर में आरंभ किया - मेरी जुबान में भारतीयता की पूर्ण झलक दिखाई देती है। मेरी लिपि देवनागरी है। मेरे कई रूप हैं - जैसे राजभाषा, द्वितीय भाषा, संपर्क भाषा, मानक भाषा। मेरी सबसे छोटी बहन 'बोली' है। वह बड़े-बड़े क्षेत्रों में दिखाई नहीं देती। उसका क्षेत्र सीमित है।

विदेशी जुबान ने पूछा - ये 'बोली' क्या है ?

यहाँ साहित्य ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह भाषा की छोटी बहन से परिचित ना था क्योंकि इसका क्षेत्र सीमित है।

भाषा ने अपना वक्तव्य जारी रखते हुए कहा - प्राचीन काल से न जाने कितने लेखकों, निर्देशकों, निर्माताओं ने मेरे अस्तित्व को अक्षुण्ण रखा। आज पूरा भारत मेरी जुबान को समझता है, बोलता है। कई संस्थाएं मेरे अस्तित्व को बनाए रखने में निरंतर प्रयास कर रही हैं। मेरे अस्तित्व से ही भारत का अस्तित्व संभव है। भारत की जिस दिन एक राष्ट्रभाषा होगी उसी दिन





भाषाई लड़ाई समाप्त होगी। इसके लिए निरंतर मेरे अभिन्न मित्र विचार और साहित्य प्रयासरत हैं।

भाषा ने साहित्य को मंच पर आमंत्रित किया। वह थोड़ी देर विचार पर ध्यान केंद्रित कर मंच पर पहुँचा। उसने प्रभावशाली शब्दों में अपनी बात रखी। साहित्य ने चिंता जताई कि यदि भारत के लोग मेरे मित्रों पर ध्यान केंद्रित कर उनके अस्तित्व को बनाए रखेंगे तभी मेरा अस्तित्व मेरी पहचान बनी रहेगी।

हजारों भाषाओं के तूफान में
निज पतवार हाथ में लिए
कभी न रुकने का संकल्प लिए
हम खड़े हैं मझधार में ।

साहित्य की इन पंक्तियों को सुनकर विदेशी जुबान पर इतना सकारात्मक प्रभाव पड़ा कि उसने अपनी सभाओं में भाषा, साहित्य और विचार को आमंत्रित किया। उसने कहा - हमारी सभा में विचार, साहित्य एवं भाषा साथ में शामिल हो तो सभा में चार चाँद लग जाएंगे और हमें प्रेरणा भी मिलेगी।

भारत के विचार, भाषा और साहित्य ने सम्मिलित स्वर में कहा - हमारे लिए सारी जुबानें आदरणीय हैं, स्वीकार्य हैं पर भारत की एक ही राष्ट्रभाषा होनी चाहिए। इसमें हम निरंतर प्रयासरत हैं।



सुरभि 23वां अंक

व्यावहारिकता

श्री संजीव कुमार यादव

कनिष्ठ अनुवादक

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) का कार्यालय

हैदराबाद, शाखा: भुवनेश्वर



व्यावहारिकता समय की माँग है। जीवन में सुख-दुःख का लेखा-जोखा लगा रहता है। मानव आशा और निराशा की झंकोरों से झूलता हुआ विरह और व्यथा की साँस लेते हुए आदि की ओर से आता है और अनंत की ओर चला जाता है। मानव इस जीवन काल में प्रायः उधेड़बुन में रहता है कि कैसे जीवन जीऊँ? वह विभिन्न महापुरुषों व पौराणिक कथाओं के नायकों को आदर्श मानकर जीवनशैली अपनाना चाहता है। परन्तु वह माया-जाल के दुष्चक्र में इस तरह फँस जाता है कि वह व्यावहारिक न होकर दिखावटीपन का सहारा लेता है।

कहा जाता है कि वर्तमान युग में कोई भी मानव कितना भी प्रयास कर ले जीवन के सभी मानदंड का अनुपालन नहीं कर सकता है। वह एक आदर्श व सुव्यवस्थित जीवन नहीं जी सकता है। हो सकता है कुछेक इंसान इसके अपवाद हों। परन्तु अधिकांश लोग प्रारंभ में जिस जीवनशैली की परिकल्पना करते हैं, वे उसे अंत तक साकार नहीं कर पाते हैं।

आइए हम सब व्यावहारिकता के सिद्धांत को निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से समझने का प्रयास करते हैं:

1. व्यावहारिक व्यक्ति किसी भी शाश्वत सत्य में विश्वास नहीं करता है। उसकी यह धारणा होती है कि जीवन-मूल्य एवं सत्य देश काल एवं परिस्थितियों के अनुसार बदलते रहते हैं। वह जीवन के स्थायी एवं निश्चित आदर्श की सत्ता को स्वीकार नहीं करता है क्योंकि उसका मानना होता है कि सभी चीजें समय की माँग होती हैं। उदाहरण के लिए जिन चीजों का महत्व 16वीं या 17वीं सदी में था, उन चीजों की वर्तमान परिदृश्य में उतनी महत्ता नहीं है।



2. व्यावहारिक व्यक्ति परिकल्पना का प्रयोग करके ज्ञान का द्वार खोल सकता है।
3. ज्यादातर व्यावहारिक व्यक्ति जीवन मात्र से संबंध रखना चाहते हैं न कि आत्मा, धर्म और ईश्वर से।
4. व्यावहारिक व्यक्ति अंधविश्वास, आडंबर का पूर्णतः विरोध करते हैं। वे समाज की बनी-बनायी मिथ्या जीवन-शैली को नकारते हैं।
5. व्यावहारिक व्यक्ति परिस्थितियों के परिवर्तन के फलस्वरूप उत्पन्न समस्याओं के निराकरण हेतु चिंतन करता रहता है और संभवतः उस कार्य में सफल भी हो जाता है।
6. व्यावहारिक व्यक्ति में रचनात्मक क्षमता एवं कौशल विकास का समावेश होता है।
7. व्यावहारिक व्यक्ति वातावरण के अनुकूल ढलने के लिए जीवनपर्यंत मेहनत करता है।
8. व्यावहारिक व्यक्ति न केवल अपने परिवार का कल्याण करता है, बल्कि वह समाज और देश के समग्र विकास हेतु विशेष योगदान देता है।

हिंदी के प्रसिद्ध उपन्यासकार प्रेमचंदजी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से यथार्थवाद का चित्रण किया और उनकी इसी लेखन-शैली के कारण उन्हें पूरे विश्व में ख्याति मिली। प्रेमचंद जी की कहानियों/ उपन्यासों में नायक/नायिकाओं के चारित्रिक चित्रण से पाठक वर्ग को यह अनुभूति हो जाती है कि किसी भी काल-खण्ड में मनुष्य को व्यावहारिक होना परम आवश्यक होता है।

किसी भी व्यक्ति के अव्यावहारिक से व्यावहारिक बनने की राह आसान नहीं है क्योंकि इच्छाएं अनंत हैं। भगवान गौतम बुद्ध ने भी इंसान के दुःखों का कारण इच्छाओं को बताया है। उनके द्वारा दिए गए उपदेश में बताया गया है कि इच्छाएं अनंत हैं, इच्छाओं को पूरा कर पाना नामुमकिन है, हमारी इच्छाएं ही हमारे दुःखों का कारण हैं। हम अपनी इच्छाओं को त्याग कर ही मोक्ष की प्राप्ति कर सकते हैं।

परन्तु जीवन के विभिन्न पहलुओं में व्यावहारिकता की नितांत आवश्यकता होती है। यदि आज आप व्यावहारिक नहीं हैं, तो कल आपको निश्चय ही कष्टदायी जीवन प्राप्त होगा। यह चिरंतन सत्य है। भीड़ हमेशा सही नहीं हो सकती है। व्यावहारिक होने के लिए जरूरी नहीं है कि व्यक्ति शिक्षित हो, अशिक्षित व्यक्ति भी व्यावहारिक हो सकता है। हमारे महापुरुषों ने





समय-काल को देखते हुए व्यावहारिकता का मार्ग चुना और सफल भी हुए। महात्मा गाँधी (बापू जी ने) सत्य और अहिंसा को व्यावहारिक बनाकर ईश्वरीय अवतार जैसा कार्य किया।

संक्षेप में, मैं इस लेख के माध्यम से पाठक वर्ग को कहना चाहूँगा कि जैसे मोक्ष की प्राप्ति के लिए जीवन-मृत्यु के बंधन से ऊपर उठना होता है। ठीक उसी प्रकार व्यक्ति को आदर्श जीवन जीने के लिए व्यावहारिकता का मार्ग अपनाना पड़ेगा और “ॐ व्यावहारिकताय नमः” का जाप करना होगा।

व्यावहारिक बनने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को अन्य व्यक्ति के साथ हर बात स्पष्ट रूप से करनी चाहिए अन्यथा बातचीत में कमी होने के कारण चीजें खराब हो जाती हैं। व्यावहारिकता एक ऐसी कला है जिसे आपको निरंतर सीखना पड़ेगा। सीखना बंद, व्यावहारिकता बंद। जीवन की परिस्थितियाँ हमें व्यावहारिक होना सिखाती हैं।

व्यावहारिक बनने के लिए कुछ बिंदु-

1. खुद का ख्याल रखें
2. बहुत अधिक कार्यों में न उलझे रहें।
3. टेलीविजन/मोबाईल/अन्य अनावश्यक चीजों का कम प्रयोग करें।
4. किसी अन्य व्यक्ति के लिए अनावश्यक हमेशा उपलब्ध न रहें। हाँ, जरूरत पड़ने पर मदद करने के लिए हमेशा तत्पर रहें।
5. दैनिक कार्यों को समय पर करें अर्थात् टाल-मटोल न करें।
6. अपने दिमाग से नकारात्मकता को हटाएं।
7. अपने लिए समय निकालें।
8. स्पष्ट लक्ष्य रखें।
9. तनावरहित रहें।
10. किसी भी कार्य का निर्णय यथाशीघ्र न लें।

हमें व्यावहारिक बनने के लिए कुछ विशेष प्रयास करने की जरूरत नहीं है बस इंसान को सामने वाले व्यक्ति या समस्याओं को परखें तथा परखने के बाद ही निर्णय लें। प्रायः भावनाओं में बहकर किए गए कार्य इंसान को अव्यावहारिक बना देते हैं अर्थात् कहने का तात्पर्य यह है कि व्यावहारिकता का प्रमुख गुण है- इंसान की समझ को विकसित करना। अंत में यह कहना





चाहूँगा कि “मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।” मन को वश में करने के लिए उस पर दो तलवारों से प्रहार करना पड़ता है। एक तलवार अभ्यास की है और दूसरी तलवार है वैराग्य की। मन से मजबूत लोग स्वस्थ व आदर्श आदतें रखते हैं। वे अपने विचार, व्यवहार और आवेग को नियंत्रित करना जानते हैं। जो व्यक्ति दृढ़ इच्छाशक्ति के धनी होते हैं। वे प्रायः व्यावहारिकता का रसपान करते हैं। भागवत गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है- मन को नियंत्रित करने के लिए वैराग्य और अभ्यास की आवश्यकता होती है। वर्तमान परिदृश्य में प्रत्येक इंसान वैरागी तो नहीं हो सकता है। परन्तु वह अभ्यास के माध्यम से व्यावहारिक तो अवश्य हो सकता है।



शिखर-धर्म

श्री राहुल कुमार वर्मा
कनिष्ठ अनुवादक



पूरे विश्व में लगभग 200 देश हैं जिनमें 300 से अधिक संप्रदाय, मजहब या धर्म हैं। इनमें से व्यापक रूप से 8 धर्म ही प्रचलित हैं ईसाई, मुस्लिम, हिंदू, बौद्ध, सिख, जैन, पारसी और यहूदी। इसके अलावा यजीदी, शिंतो, पेगन, बहाई, झूज, मंदेश, एलामितेरा आदि धर्मों को मानने वालों की संख्या बहुत कम है। सम्पूर्ण विश्व में ईसाई धर्म को मानने वालों की संख्या सबसे अधिक है।

साधारण शब्दों में धर्म, संप्रदाय, मजहब या रिलिजन, एक परंपरा के मानने वालों का समूह है।

वर्तमान में भारतवर्ष में विश्व के लगभग सभी प्रमुख धर्मों को मानने वाले लोग हैं हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, बौद्ध, जैन, पारसी आदि। भारत विश्व की चार धार्मिक परम्पराओं का जन्मस्थान है (हिंदू, सिख, बौद्ध एवं जैन)।

मौर्य साम्राज्य के समय तक भारत में दो प्रकार की दार्शनिक परंपरा प्रचलित थी, श्रमण धर्म तथा वैदिक धर्म। ये दोनों परंपराएं ही सनातन धर्म का हिस्सा रही हैं। इन दोनों परंपराओं का अस्तित्व हजारों वर्षों तक साथ-साथ बना रहा है। बौद्ध और जैन धर्म श्रमण परंपरा से निकल कर आये हैं जबकि आधुनिक हिंदू धर्म का जन्म वैदिक परंपरा का ही विस्तार है। साथ- साथ मौजूद रहने वाली ये परंपराएं परस्पर प्रभावशाली रही हैं।

शिखर-धर्म का अर्थ है सबसे बड़ा धर्म। हम इसका आंकलन किसी धर्म को मानने वालों की संख्या से नहीं कर सकते क्योंकि असल में शिखर-धर्म कोई अलग से धर्म है ही नहीं। इसके लिए किसी धर्म को छोड़ने या किसी धर्म से जुड़ने की आवश्यकता नहीं है। ये सभी धर्मों में मौजूद है और इसकी अनुपालना किये बिना कोई व्यक्ति किसी भी धर्म की अनुपालना करने में विफल होगा क्योंकि जो मानव को मानव बनाये वही धर्म है अर्थात् साधारण शब्दों में शिखर-धर्म का अर्थ है मानव- धर्म।





मानव धर्म उस स्वच्छ व्यवहार को माना गया है जिसका अनुसरण करके सभी को प्रसन्नता और शांति प्राप्त हो सके। मानव धर्म हमें संसार में परस्पर प्रेम, सहानुभूति और एक दूसरे के प्रति सम्मान करना सिखाकर श्रेष्ठ आदर्शों की ओर ले जाता है। दूसरों की भावनाओं को न समझना और उनके साथ छल कपट करना मानव-धर्म नहीं है।

देखा जाए तो मानव धर्म ही है जो हमें अपने धर्म के अलावा दूसरे धर्म के लोगों से भी जोड़ता है दूसरों के धर्म का भी सम्मान करना सिखाता है और सब से प्रेम करना सिखाता है। अन्य शब्दों में जो मनुष्य का धर्म है वही मानव धर्म है।

हम किसी भी धर्म के अनुयायी होने से पहले एक मानव हैं। संसार का हर धर्म मानव और प्राणी मात्र की सेवा की बात करता है और मानव-धर्म को सर्वोपरि बताता है। मानवता के साथ जीवन यापन करना ही मानव-धर्म है। व्यक्ति को कभी भी मानवता में विश्वास नहीं खोना चाहिए क्योंकि यही शिखर-धर्म अर्थात् सबसे बड़ा धर्म है। मानव में से मानवता निकाल दो तो उसमें और एक पशु में कोई फर्क नहीं है और तुरंत ही वह अपने मानव कहलाने का हक भी खो देगा।

महाभारत कथा में यक्ष युधिष्ठिर से पूछते हैं कि इस लोक में श्रेष्ठ धर्म क्या है तो युधिष्ठिर उत्तर देते हैं कि मानवता ही श्रेष्ठ धर्म है। मानवता की परिभाषा है जिस व्यक्ति में प्राणी मात्र के प्रति दया, करुणा, सेवाभाव और परोपकार की भावना है उसी में मानवता का गुण है।

दूसरों का हित करना मनुष्य का कर्तव्य है और धर्म भी। जब तक मनुष्य में मानवता का भाव जागृत नहीं होगा तब तक उसमें सेवा भाव का होना असंभव है और यही सेवा भाव उसे शिखर- धर्म तक ले जाता है। इंसान में दूसरों के प्रति दया, करुणा, सेवाभाव और परोपकार की भावना का विकास ही मानव-धर्म है।

अहंकार, असत्य, लोभ, घृणा, ईर्ष्या, जैसे दुर्गुण मानव को शिखर-धर्म से दूर ले जाते हैं और उसमें मानवता को पनपने नहीं देते। इन दुर्गुणों को त्यागकर ही मनुष्य अपने अंदर मानवता को विकसित कर सकता है मनुष्य को स्वयं के हित के साथ दूसरों के हितों की भी चिंता करनी चाहिए। मनुष्य को एक अच्छा हिंदू, अच्छा मुस्लिम, अच्छा सिख, अच्छा ईसाई, अच्छा बौद्ध होने के लिए सबसे पहले एक अच्छा इंसान होना अनिवार्य है।





सभी धर्मों में हुए महापुरुषों ने हमेशा मानवता का पाठ पढ़ाया है और हमें सिखाया है कि हम अपने अंदर मानवता का समावेश करना है। दया, करुणा, परोपकार जैसे गुणों का विकास कर ही हमें शिखर-धर्म को शिखर पर पहुँचा सकते हैं।



सुरभि 23वां अंक

मैथिल कवि कोकिल विद्यापति - भक्ति ऐसी की भोले भी दास बन गए

श्री राजेश झा
वरिष्ठ लेखापरीक्षक
महालेखाकार (लेखापरीक्षा II) का कार्यालय
ओडिशा, भुवनेश्वर



‘महाकवि कोकिल विद्यापति’ का पूरा नाम “विद्यापति ठाकुर था। धन्य है उनकी माता “हाँसिनी देवी” जिन्होंने ऐसे पुत्र रत्न को जन्म दिया, धन्य है विसपी गाँव जहाँ कवि कोकिल ने जन्म लिया ।

विद्यापति मिथिला निवासी थे। वे बिसइवार वंश के विष्णु ठाकुर की 8 वीं पीढ़ी की संतान थे। विद्यापति की माता का नाम गंगा देवी और पिता का नाम गणपति ठाकुर था विद्यापति ने प्रारंभिक शिक्षा महामहोपाध्याय हरि मिश्र से प्राप्त की । विद्यापति की पत्नी का नाम मंदाकिनी और पुत्री का नाम दुल्लहि था। विद्यापति के पुत्र का नाम हरपति और पुत्रवधू का नाम चंद्रकला था। वे बिसइवार वंश के विष्णु ठाकुर की आठवीं पीढ़ी की संतान थे। उनकी माता गंगा देवी और पिता गणपति ठाकुर थे। वैसे रामवृक्ष बेनीपरी, उनकी माँ का नाम हाँसनी देवी बताते हैं, पर विद्यापति के पद की भनिता (हासिन देवी पति गरुड़नरायन देवसिंह नरपति) से स्पष्ट होता है कि हाँसनी देवी महाराज देवसिंह की पत्नी का नाम था। कहते हैं कि गणपति ठाकुर ने कपिलेश्वर महादेव (वर्तमान मधुबनी जिला में अवस्थित) की घनघोर आराधना की थी, तब जाकर ऐसे पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई ।

मैथिल कोकिल के नाम से चर्चित विद्यापति ठाकुर भगवान शिव के अनन्य भक्त थे। एक कथा प्रचलित है कि उनकी भक्ति और रचनाओं से प्रसन्न होकर भगवान शिव एक दिन नौकर के वेश में इनके घर पहुँचे और चाकरी करने का मौका देने की गुहार लगाई। शिव ने अपना नाम 'उगना' बताया। जैसे बालचंद्र अपभ्रंश में बालचन या बलचनमा हो जाता है, उसी तरह उग्रनाथ को लोग उगना कहते हैं।





विद्यापति की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी, इसलिए उन्होंने उगना को बतौर नौकर अपने घर में रखने से मना कर दिया। लेकिन शिव मानने वाले कहाँ थे। पगार के बजाय सिर्फ दो वक्त के भोजन पर नौकरी करने को तैयार हो गए। विद्यापति की पत्नी सुधीरा ने कहा, उगना बड़ा नेक लड़का लगता है, रख लीजिए..हमारी सेवा करने वाला भी तो कोई नहीं है। विद्यापति ने पत्नी की बात मान ली और शिव की इच्छा भी पूरी हो गई।

एक दिन विद्यापति राजा शिव सिंह के दरबार में जा रहे थे। साथ में उगना भी था। तेज गर्मी की वजह से विद्यापति का गला सूखने लगा। आसपास पानी का कोई स्रोत नहीं था। व्याकुल विद्यापति ने उगना से कहा, कहीं से जल का प्रबंध करो, अन्यथा मैं प्यासा ही मर जाऊंगा। शिव कुछ दूर जाकर पेड़ों की आड़ में छिपकर अपने आप को वास्तविक रूप में ले आए। उनकी जटा में गंगा थीं। जटा खोलकर उन्होंने लोटे में जल भर लिया और फिर उगना रूप में विद्यापति के सामने पानी भरा लोटा रख दिया।

विद्यापति ने जब जल पिया तो उन्हें गंगाजल का स्वाद महसूस हुआ। वह आश्चर्यचकित हो उठे कि इस वन में दूर तक कहीं जल का कोई स्रोत नहीं दिखता, लेकिन उगना को गंगाजल कहाँ मिल गया। विद्यापति को उगना पर संदेह होने लगा। उन्होंने सोचा, कोई साधारण व्यक्ति इतनी जल्दी गंगाजल नहीं ला सकता। इसमें जरूर कोई दिव्यशक्ति है। वह उगना से उसका वास्तविक परिचय बताने की जिद करने लगे।

जब विद्यापति ने उगना को शिव कहकर उनके चरण पकड़ लिए, तब उगना को अपने वास्तविक स्वरूप में आना पड़ा। शिव ने विद्यापति से कहा, मैं तुम्हारे साथ उगना बनकर रहना चाहता हूँ, लेकिन कभी किसी को मेरा वास्तविक परिचय मत देना। जिस दिन किसी को मेरा वास्तविक परिचय दोगे, मैं तत्क्षण ओझल हो जाऊंगा।

विद्यापति को बिना मांगे संसार के ईश्वर का सानिध्य मिल चुका था। उन्होंने शिव की शर्त मान ली।

एक दिन सुधीरा ने उगना को जंगल से लकड़ियाँ बीनकर लाने के लिए कहा। उगना दूसरे काम में लग गया और वह काम भूल गया। सुधीरा इससे नाराज हो गईं और चूल्हे से जलती लकड़ी निकालकर उगना की पिटाई करने लगी। विद्यापति ने जब यह दृश्य देखा तो अनायास ही उनके





मुँह से निकल पड़ा, अरे, अहां ई की अनर्थ करै छी, ई त' साक्षात् भगवान शिव थिकाह! विद्यापति के मुँह से ये शब्द निकलते ही शिव अंतर्ध्यान हो गए।

इसके बाद विद्यापति पागलों की भाँति 'उगना रे मोर कतय गेलाह' कहते हुए वनों में, खेतों में, हर जगह उगना को ढूँढने लगे। भक्त की ऐसी मनोदशा देखकर शिव को दया आ गई। एक वन में भगवान शिव उगना के रूप में प्रकट हो गए, मगर कहा कि 'अब मैं तुम्हारे साथ नहीं रह सकता। उगना रूप में मैं जो तुम्हारे साथ रहा उसके प्रतीक चिह्न के रूप में अब मैं शिव लिंग के रूप में विराजमान रहूँगा। शिव की इस लीला से गौरी भी प्रसन्न हुई। विद्यापति की एक रचना की पंक्ति है- 'नंदन वन में भेटला महेश, गौरी मन हर्षित मेटल कलेश'।

इसके बाद शिव अपने लोक लौट गए और उस स्थान पर शिवलिंग प्रकट हो गया। उगना महादेव का प्रसिद्ध मंदिर वर्तमान में मधुबनी जिले के भवानीपुर गाँव में स्थित है।

मिथिला के लोगों को 'देसिल बयना सब जन मिट्ठा' का सूत्र देकर विद्यापति ने उत्तर बिहार में लोकभाषा के प्रति जनचेतना को जीवित करने का हरसंभव प्रयास किया। आज भी मिथिला पर महाकवि विद्यापति का व्यापक प्रभाव देखने को मिलता है। उनकी नचारी, महेशवाणी, गंगा विनती, प्राती वगैरह मिथिला के लोगों के मन-मस्तिष्क में रच-बस गई है।

विद्यापति को एक दिन अपनी मृत्यु का आभास हुआ, तो उन्होंने अपने मित्र, राजा और गुरुओं को स्मरण करते हुए कहा, सपन देखल हम शिव सिंह भूप/ बत्तीस बरस पर सांवर रूप/ बहुत देखल गुरुजन प्राचीन/ आब भेलहुं हम आयु विहीन।

महाकवि गंगा लाभ करना चाहते थे, लेकिन उम्र की अधिकता के कारण गंगा तक पहुँचने से लाचार थे। उन्होंने आवहन किया तो गंगा प्रकट हुई और वह उसमें समा गए। वह तिथि थी कार्तिक धवल त्रयोदशी। इस तिथि को देशभर में मैथिल समुदाय हर साल विद्यापति स्मृति पर्व मनाता है।



नारी शक्ति का परिचय नारी शक्ति: देवी और प्राकृतिक शक्ति का प्रतीक

सुश्री तितली पंडा, कक्षा-XII

सुपुत्री गंगाधर पंडा

सहायक पर्यवेक्षक



आद्या शक्ति: प्रकटायां परिपालय मां।

अभयं करावाणी दित्यै नायाच दर्शनात्॥

अर्थात् - ओ माँ आद्या शक्ति, मुझे संरक्षित रखें। आपके दर्शन से ही भय हरने की क्षमता प्राप्त होती है। “शक्ति” शब्द संस्कृत भाषा से लिया गया है जिसका मतलब होता है “शक्ति” या “बल”। यह शब्द व्यापार, विज्ञान, और धार्मिक शास्त्रों में विभिन्न अर्थों में प्रयोग होता है। धार्मिक विचार में, “शक्ति” भगवती की शक्ति या शक्तिस्वरूपा देवी का प्रतीक है, जिसे अलग-अलग रूपों में पूजा जाता है। व्यापार और विज्ञान में, “शक्ति” शब्द का अर्थ व्यावसायिक ताकत या ऊर्जा को दर्शाता है, जो उत्पादन और संचालन के क्षेत्र में प्रयोग होता है। इस शब्द का उपयोग विभिन्न सामाजिक, आर्थिक, और धार्मिक संदर्भों में किया जाता है और इसका महत्व विभिन्न परिस्थितियों में अलग-अलग होता है।

नारी शक्ति के विषय में बात करना, एक समर्थ और प्रेरणादायक विषय है। हमारे समाज में महिलाओं को समाज में समानता और सम्मान की दिशा में अग्रसर करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। नारी शक्ति न केवल स्त्रियों के विकास के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि समाज के समृद्धि और विकास के लिए भी आवश्यक है। इस लेख में, हम नारी शक्ति के महत्व, हिंदू मिथक, भारतीय साहित्य, इतिहास और वर्तमान परिस्थितियों में महिलाओं की स्थिति पर विचार करेंगे।

नारी शक्ति का महत्व:



नारी शक्ति का अत्यधिक महत्व है, उनके बिना कोई भी समाज अधूरा है क्योंकि महिलाएं समाज का आधार और अभिवृद्धि होती हैं। महिलाएं गृह के प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं और समाज में संतुलन का संरक्षण करती हैं। वे ना केवल अपने परिवार में बल्कि समाज में भी नेतृत्व और प्रेरणा का स्रोत होती हैं।

नारी शक्ति और हिंदू पुराणशास्त्र : देवी के रूपों की महत्ता:-

हिंदू पुराणशास्त्र में, नारी शक्ति को देवी के रूप में प्रकट किया गया है। देवी के रूप में माँ दुर्गा, माँ लक्ष्मी, और माँ सरस्वती देवी भगवती के तीन प्रमुख रूप हैं, जो जीवन के विभिन्न पहलुओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। माँ दुर्गा, शक्ति और साहस का प्रतीक हैं, माँ लक्ष्मी समृद्धि और सम्पत्ति की देवी हैं और माँ सरस्वती ज्ञान और बुद्धि की देवी हैं। इन देवियों की पूजा करने से हम महिलाओं का आत्मविश्वास मजबूत होता है और हम समाज में अपनी पहचान बनाने में सफल हो पाते हैं।

भारतीय इतिहास में नारी शक्ति:

भारतीय इतिहास में, महिलाओं ने हमेशा सक्रिय भूमिका निभाई है। उन्होंने देवी, योगिनी, रानी, लेखिका, और वैज्ञानिक के रूप में अपनी पहचान बनाई है। रामायण में सीता, महाभारत में द्रौपदी और कुंती की कहानियाँ महिलाओं की शक्ति और प्रेरणा का प्रतीक हैं। भारतीय इतिहास में महिलाओं की योगदान ने समाज को अग्रणी बनाया है।

उदाहरणस्वरूप:

1. रानी लक्ष्मीबाई: झाँसी की रानी जिन्होंने ब्रिटिशों के खिलाफ लड़ाई लड़ी।
2. सरोजिनी नायडू: भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में एक प्रमुख नेत्री और महिला समर्थक।
3. कल्पना चावला: प्रथम भारतीय महिला अंतरिक्ष यात्री और अंतरिक्ष यातायात वैज्ञानिक।
4. मदर टेरेसा: विश्व प्रसिद्ध सेविका और गरीबों और असहायों की मदद करने वाली।
5. इंदिरा गांधी: भारत की प्रथम महिला प्रधानमंत्री और भारतीय राजनीति की प्रमुख नेत्री।
6. किरण बेदी: प्रथम महिला आईपीएस अधिकारी।





7.पीवी सिंधु: पहली भारतीय महिला बैडमिंटन खिलाड़ी जिन्होंने ओलंपिक में दो पदक जीते।

8.सानिया मिर्जा: भारतीय टेनिस स्टार और विश्व प्रसिद्ध खिलाड़ी।

वर्तमान में सरकार द्वारा महिला सशक्तिकरण:

वर्तमान में, भारत सरकार ने महिलाओं के समर्थन और समानता के लिए कई पहल की हैं। भारत सरकार द्वारा महिलाओं के लिए विशेष योजनाओं में से कुछ उदाहरण हैं:

1.बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ: महिला शिक्षा और जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए शिक्षा स्थलों में छात्राओं को वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है।

2.महिला उत्थान योजना: महिलाओं को व्यावसायिक और वित्तीय स्वतंत्रता प्रदान करने के लिए उन्हें ऋण और प्रशिक्षण की सुविधा की जाती है।

3.स्त्री शक्ति प्रभा: नारी उत्थान और रोजगार के लिए उन्हें वित्तीय सहायता और प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है।

4.महिला एकीकृत विकास योजना: महिलाओं को आर्थिक और सामाजिक रूप से सशक्त बनाने के लिए उन्हें विभिन्न क्षेत्रों में संबलता प्रदान की जाती है।

5.बिगुल योजना: महिलाओं को उनकी क्षमता/ कुशलता को बढ़ावा देने के लिए वित्तीय सहायता और प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है।

6.महिला उद्यमिता निधि: महिलाओं को उद्यमिता के क्षेत्र में अपने स्थान को स्थापित करने के लिए वित्तीय सहायता और प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है।

7.महिला और बाल विकास योजना: महिलाओं और बच्चों को स्वास्थ्य, शिक्षा और पोषण की सुविधा प्रदान की जाती है।

महिलाओं की स्थिति और समस्याएं:

भारतीय समाज में महिलाओं को अनेक सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। उन्हें आधुनिक समाज में अपनी जगह बनाने के लिए समाज में लड़ाई लड़नी पड़ती है। महिलाओं को बाहरी दबाव, स्तरीय विभाजन और व्यावहारिक और सामाजिक





विवादों का सामना करना पड़ता है। कुछ समुदायों में स्त्रियों की शिक्षा और कर्मचारी होने को उचित नहीं माना जाता जिससे उन्हें समाज में समानता की प्राप्ति में कठिनाई होती है। समाज में स्त्रियों को अधिकारों और स्वतंत्रता की कमी महसूस होती है, जिससे उन्हें निराधार और निर्णायक नहीं माना जाता। स्त्रियों को अक्सर उनके शारीरिक रूप और बर्ताव के आधार पर जज्बाती और सामाजिक रूप से अपमानित किया जाता है। कुछ समुदायों में औरतों को उनके पति या परिवार के पुरुषों के अधीन होना अनिवार्य माना जाता है जिससे वे अपने आप को स्वतंत्र महसूस नहीं करती हैं। समाज में महिलाओं को काम करने की स्वीकृति में कमी होने के कारण, आर्थिक सशक्तिकरण नहीं मिलता है। इस तरह की स्थितियों में, नारी शक्ति में अभिवृद्धि करने के लिए आवश्यकता है।

समाधान:

हम महिलाओं को समस्याओं का सामना करने के लिए निम्नलिखित समाधान प्रदान कर सकते हैं:

- 1.बल: महिलाओं को अपने अधिकारों की रक्षा करने के लिए सशक्त बनाना।
- 2.तप: महिलाओं की शिक्षा और ज्ञान में सुधार करने के लिए शिक्षा प्रदान करना।
- 3.स्त्रीशक्ति: समाज में महिलाओं को समानता और सम्मान की स्थिति में लाने के लिए लड़ाई लड़ना।
- 4.शांति: महिलाओं को अपने स्वास्थ्य और भविष्य की चिंता करने के लिए उनका साथ देना।
- 5.विजय: महिलाओं को स्वतंत्रता के साथ अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने की प्रेरणा देना।
- 6.क्रोध: महिलाओं को न्याय और समाज में समानता के लिए लड़ने के लिए प्रेरित करना।
- 7.शक्ति: महिलाओं को अपने आत्मविश्वास और सामर्थ्य की अनुभूति कराना।
- 8.सच्चाई: महिलाओं को समाज में सत्य की रक्षा करने के लिए प्रेरित करना।
- 9.विश्वास: महिलाओं को अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए आत्मविश्वास प्रदान करना।

निष्कर्ष (दिशा मार्ग):



सुरभि 23वां अंक



नारी शक्ति का महत्व और प्रभाव समझने के लिए हमें महिलाओं को समाज में समानता और सम्मान की दिशा में अग्रसर करना होगा। देवी भगवती की तीन प्रमुख रूप देवियों के गुणों का अनुसरण करते हुए, हमें महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक, और राजनीतिक समस्याओं का सामना करने के लिए सशक्त बनाना होगा। इससे हम समृद्धि, समानता, और विकास के समाज की दिशा में अग्रसर हो सकते हैं। महिलाओं को अपनी शक्ति का उपयोग करके समाज में अपनी पहचान बनाने और स्थिति सुधारने में श्रम करना होगा। इस प्रकार, नारी शक्ति के महत्व को समझने और महिलाओं को समाज में सशक्त करने के लिए हमें समृद्ध समाज के निर्माण के लिए महिलाओं की सामर्थ्य और समर्थन की आवश्यकता है। हम सभी को मिलकर नारी शक्ति के महत्व को समझने और महिलाओं को समृद्ध और समान समाज के लिए योगदान देने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

आशा है कि यह लेख आपको महिलाओं की शक्ति और समस्याओं के समाधान के विषय में सोचने के लिए प्रेरित करेगा। नारी शक्ति को समर्थ बनाना और समृद्ध समाज के निर्माण में हम सभी का योगदान महत्वपूर्ण है। अध्यात्म से लेकर आधुनिकता तक, नारी शक्ति हमेशा समाज की आधारशिला रही है। इसलिए, हमें समाज में महिलाओं को समानता और सम्मान की दिशा में अग्रसर करने के लिए प्रतिबद्ध रहना चाहिए।



वो दिन भी आएगा

श्री जगबंधु दास
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) का कार्यालय
हैदराबाद, शाखा: भुवनेश्वर



यह बात उन दिनों की है, जब हमारे गाँव में नया नया टेलीविजन आया था और टीवी पर आने वाले एक ही प्रोग्राम को देखने के लिए लंबे बांस में फंसे एंटीने को इधर-उधर करके एडजस्ट करना कितना चुनौती भरा था, यह सबको याद है। एक ही चैनल को देख-देख कर मन में यह ख्याल आता था कि क्या “वो दिन भी आएगा” जब रेडियो की भांति ट्यूनर घुमा कर हम अलग-अलग टीवी कार्यक्रम देख पाएंगे। आज वो दिन आ गया जब हम रिमोट कंट्रोल से बटन दबा-दबा कर सैंकड़ों कार्यक्रम देख रहे हैं।

कितने आश्चर्य की बात है, हम घर बैठे ना केवल दुनिया के कोने-कोने की खबर जान पा रहे हैं बल्कि सबको आँखों के सामने देखने में भी समर्थ हैं। धन्य हैं जे.एल.बेयर्ड जिन्होंने अपने घर के एक कमरे से दूसरे कमरे का दृश्य देखने की कोशिश में, हम सब को घर बैठे दुनिया दिखाने में मदद की है। एक ऐसी तकनीक जो तस्वीर को विद्युत् तरंगों में बदलकर एक जगह से दूसरी जगहों पर पहुँचा सकती है, वो भी बेहतर क्वालिटी के साथ। तब मन में ख्याल आया कि “क्या वो भी दिन आएगा” जब हम केवल तस्वीर ही नहीं बल्कि डेटा को भी भेज पाएंगे। धन्य हो इंटरनेट के आविष्कार का, जिसका उपयोग करके तस्वीर के साथ-साथ कई सारे तथ्यों को भेजा जा रहा है। इन सब आश्चर्यजनक घटनाओं को देखकर मन में ख्याल आता है कि क्या कभी ऐसा भी दिन आएगा जब मात्र वस्तुएं ही नहीं मानव भी विद्युत् तरंग के सहारे एक स्थान से दूसरे स्थान को भेजे जाएंगे ?

अंतरात्मा से जवाब आया हूँ “वो दिन भी आएगा, जरूर आएगा”



मैं मतदान करने जरूर जाऊंगा

गिरराज शरण अग्रवाल
हिंदी अधिकारी



चाहे सूरज उगले आग,
चाहे धरती देती हो ताप,
मैं मतदान करने जरूर जाऊंगा।
मैं मतदान करने जरूर जाऊंगा।

कसम खाता हूं इस दिन छुट्टी नहीं मनाऊंगा,
नहीं किया मतदान तो भोजन नहीं पाऊंगा।

सुबह-सुबह उठकर सबसे पहले मतदान करने जाऊंगा,
अकेले नहीं पूरे परिवार को लेकर जाऊंगा।
इतना ही नहीं पड़ोस के चाचा-चाची, ताई-ताऊ के घर भी जाऊंगा,
उनसे मनुहार कर उनसे भी वोट डलवाऊंगा।
दिख जाए कहीं बूढ़ी काकी रास्ते में जो, उसको भी गोदी में उठाकर मतदान केंद्र छोड़कर
आऊंगा।

आता नहीं है यह अवसर बार-बार
5 वर्ष में केवल एक बार करना होता है मतदान,



सुरभि 23वां अंक



चाहे भूख हो या प्यास हो
चाहे कितनी लंबी कतार हो
मैं राष्ट्र निर्माण में अपनी भूमिका निभाऊंगा।
मैं मतदान करने जरूर जाऊंगा।
मैं मतदान करने जरूर जाऊंगा।



सुरभि 23वां अंक

फिर उसी बचपन का इंतजार रहता है।

श्री भूदेव प्रकाश
वरिष्ठ लेखापरीक्षक
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) का कार्यालय
हैदराबाद, शाखा: भुवनेश्वर



फिर उसी बचपन का इंतजार रहता है।

जहाँ हर मौसम सुहाना, हर दिन इतवार रहता है।

सावन का महीना, वो बारिश का पानी,
उस कागज नाव की अपनी कहानी।
ना सर्दी, ना गर्मी, हर ऋतु थी सुहानी,
वो चोर-सिपाही की हसीन जिन्दगानी।।
वो साईकिल का पहिया, वो यारों की मस्ती,
ना थी परवाह किसी की, और खुशियाँ थी सस्ती।
अब कहाँ वो फुर्सत वाला यार रहता है।

फिर उसी बचपन का इंतजार रहता है।

जहाँ हर मौसम सुहाना, हर दिन इतवार रहता है।

वो पापा के कंधे को झूला बनाना,
कहाँ लौटता है वो गुजरा जमाना।
वो मम्मी की लोरी के साये में सोना,
याद आता है हरपल उन सपनों में खोना।



वो होली-दिवाली की रौनक,
वो खुशियाँ मनाने की चाहत,
कहाँ अब त्योहारों का वो खुमार रहता है।

फिर उसी बचपन का इंतजार रहता है।

जहाँ हर मौसम सुहाना, हर दिन इतवार रहता है।

आज हासिल बहुत है फिर भी कुछ कमी है,
होठों पर मुस्कराहट और आँखों में नमी है।
बदला है अब जमाना और सोच भी नयी है
गैरों की बात छोड़ो, खुद की खबर नहीं है।
उंगलियों से चलते रिश्ते, पर दिल में दूरियाँ हैं,
नये दौर की ये नई मजबूरियाँ हैं।
कल होगा और बेहतर ये इंतजार हर बार रहता है।

फिर उसी बचपन का इंतजार रहता है।

जहाँ हर मौसम सुहाना, हर दिन इतवार रहता है।



सुरभि 23वां अंक



“हाय परीक्षा आई”

श्री राकेश कुमार

डी.ई.ओ.

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) का कार्यालय

हैदराबाद, शाखा: भुवनेश्वर



खेल-कूद में दिन बीता, सोने में रात गवाई।

हाय परीक्षा आई, अब क्या होगा रे भाई।।

आ जाती है हर वर्ष, लाज तक इसे नहीं आती।

जब ये आती है, आँखों से नींद चली जाती है।

कोई ऐसा वीर नहीं, जो टोक सके इसको।

स्कूल, कॉलेजों में आने से रोक सके इसको।।

सब मरते हैं, इसकी अब तक मौत नहीं आई।

हाय परीक्षा आई, अब क्या होगा रे भाई।।

डरते नहीं कभी हम बन्दूकों, तलवारों से।

डरते नहीं कभी मशालों, अंगारों से।।



सुरभि 23वां अंक



क्या कारण है किंतु बात समझ में नहीं आई।
नाम परीक्षा का सुनते ही नानी याद आई।।

हार मानकर भागे इससे कितने बलशाली।
हाय परीक्षा आई, अब क्या होगा रे भाई।।

बिन बादल बरसात, रात-भर बिजली कड़के।
ज्यों-ज्यों आये पास परीक्षा, त्यों-त्यों दिल धड़के।।

बाथरूम में अब ना फिल्म के गाने हम गाते
जो कुछ पढ़ा रात को, उसको ही है दुहराते।।



सुरभि 23वां अंक



राजभाषा

श्री अजय साव

कनिष्ठ अनुवादक

लेखापरीक्षा प्रबंधन समूह-11, पुरी



14 सितंबर सन् 1949 को हिंदी बनी भारत की राजभाषा,
करो इसका प्रचार-प्रसार यही है सभी की अभिलाषा
राजभाषा हिंदी है अखंड भारत में जन-जन का मान
चलो हम सब मिलकर इसे दें बहुत सम्मान।

अनुच्छेद 343 से 351 है राजभाषा का आधार,
भारतीय संघ की राजभाषा बनी हिंदी धारा 343 (1) के अनुसार,
अनुच्छेद 351 ने करवाया राजभाषा का विकास
हर भारतवासी के दिल की आवाज बनेगी हिंदी यही है संघ का प्रयास।

करो सब मिलकर कार्यालय में राजभाषा हिन्दी में काम
इससे होगी देश की प्रगति और बढ़ेगा राजभाषा का मान
सभी भाषाओं में हिंदी है बहुत आसान
सभी हिंदी बोले, पढ़े और लिखे, यही है सिर्फ अरमान।

राजभाषा बस भाषा नहीं, यह है जीवन की परिभाषा
हिंदी का हो उत्थान, यह है हर भारतवासी की अभिलाषा
हर भारतवासी के कंठ-कंठ से निकले राजभाषा
अखंड भारत देश की बस यही है आशा।



सुरभि 23वां अंक







सुश्री थिरसा रिया नायक



सुश्री अन्वेष्ठा मुदुली

कार्यालय

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा- I) ओडिशा, भुवनेश्वर

महालेखाकार (लेखापरीक्षा- II) ओडिशा, भुवनेश्वर

प्रधान निदेशक- लेखापरीक्षा (केंद्रीय) हैदराबाद, शाखा: भुवनेश्वर